श्रीः हरिः

गो० द० शा०

शा० म० पु०

श्रीः।

इदं पुस्तकं गौपालस्योऽस्ति

तृतीय पुस्तक १

Price
75 N.P.

* ओ३म् * गोपाल

संस्कृतशिक्षा-

* तृतीयपुस्तकम् *

जीवारामशर्म

विरचितम्.

सं० १९७२ वि०

३००० पञ्चमंसंस्करणम्, मूल्यम् ≡)

PUBLISHER—P. Jiwaram Sharma
BRINDABAN.
Printer Lakshmi Narayan
at the Lakshmi Narayan Press,
MORADABAD.

मज
गोपाल [illegible]

ओ३म्

संस्कृत-शिक्षा

तृतीय-पुस्तकम्

बलदं सकलं मतिदं विमलं सवितारमजं विनयेन-विभुम्। अनघं भगवन्तमनादिगुरुं प्रणिपत्य नमामि-नमाम्यहकम्॥ अइउण्॥ १ ॥ ऋलृक्॥ २ ॥ एओङ् ॥ ३ ॥ ऐऔच् ॥ ४ ॥ हयवरट् ॥ ५ ॥ लण् ॥ ६ ॥ ञमङणनम् ॥ ७ ॥ झभञ् ॥ ८ ॥ घढधष् ॥ ९ ॥ जबगडदश् ॥ १० ॥ खफछठथचटतव् ॥ ११ ॥ कपय् ॥ १२ ॥ शषसर् ॥ १३ ॥ हल् ॥ १४ ॥

इति प्रत्याहारसूत्राणि ।

१-अण् । २-अक्, इक्, उक् । ३-एङ् । ४-अच्, इच्, एच्, ऐच् । ५-अट् । ६-अण्, इण्, यण् । ७-अम्, यम्, ङम्, । ८-यञ् । ९-झष्, भष् । १०-अश्, हश्, वश्, झश्, जश्, बश्, । ११-छव् । १२-यय्, मय्, झय्, खय्, चय्, । १३-यर्, झर्, खर्, चर्, शर् । १४-अल्, हल्, वल्, रल्, झल्, शल् । इतने प्रत्याहार जानने चाहियें ।

(प्रत्याहार के प्रत्येक वर्णका ज्ञान)

१ अण्-अ इ उ ॥ २ ॥ अक्—अ इ उ ऋ ऌ ॥३॥ अच्—अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ॥ ४॥ अट्—अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ॥ ५ ॥ अण्—अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ॥६॥ अम्—अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न ॥ ७ ॥ अश्—अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ॥ ८ ॥ अल्—अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह ॥ ९ ॥ इक्—इ उ ऋ ऌ॥१०॥ इच्—इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ॥ ११ ॥ इण्—इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ह य व र ल ॥ १२ ॥ उक्—उ ऋ ऌ ॥ १३ ॥ एङ्—ए ओ ॥ १४ ॥ एच्—ए ओ ऐ औ ॥ १५ ॥ ऐच्—ऐ औ ॥ १६ ॥ हश्—ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ॥ १७ ॥ हल्—ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह॥१८॥ यण्—य व र ल ॥१९॥ यम्—य व र ल ञ म ङ ण न ॥ २० ॥ यञ्—य व र ल ञ म ङ ण न झ भ ॥ २१ ॥ यय्—य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प ॥२२॥ यर्-य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ॥ २३ ॥ वश्-व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ॥ २४ ॥ वल्-व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह ॥ २५ ॥ रल्-र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह ॥ २६ ॥ मय्-म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख छ ठ थ च ट त क प ॥ २७ ॥ ङम्-ङ ण न ॥ २८ ॥ झष्-झ भ घ ढ ध ॥२९॥ भय्-झ भ घ ढ ध ज ब ग

ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प ॥ ३१ ॥ झर्-झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ॥ ३२ ॥ झल्-झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह ॥ ३३ ॥ झष्-भ घ ढ ध ॥ ३४ ॥ जश्-ज ब ग ड द ॥ ३५ ॥ बश्-ब ग ड द ॥ ३६ ॥ खय्-ख फ छ ठ थ च ट त क प ॥ ३७ ॥ खर्-ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ॥ ३८ ॥ छव्-छ ठ थ च ट त ॥ ३९ ॥ चय्-च ट त क प ॥ ४० ॥ चर्-च ट त क प श ष स ॥ ४१ ॥ शर्-श ष स ॥ ४२ ॥ शल्—श ष स ह।

अथाऽच्सन्धि[1]प्रकरणम्।

(१) इकोयणचि[6] ॥ ६ । १ । ७७ ॥ इकः स्थाने यण् स्यादचि संहितायां विषये। इक् (इ, उ, ऋ, ऌ) के स्थानमें यण् (य, व, र, ल) हो अच् परे हो तो सन्धि करनेमें। जैसे दधि आनय=द-ध्-य्-आनय=दध्यानय। (तू दहीला।)मधु-अत्र=म ध् व्-अत्र=मध्वत्र(शहद यहां)। पितृ-अर्चा=पि-त् र्-अर्चा=पित्रर्चा। (पिता की पूजा)ऌ--उच्चारणम्=ल्-उच्चारणम्=लुच्चारणम्। (ऌ का बोलना) ॥ (२) एचोऽयवायावः[6] ॥ ६ । १ । ७८ ॥ एचः क्रमादय् अव् आय् आव् इमेस्युरचि। एच् (ए ओ, ऐ औ) प्रत्याहारको क्रम (सिलसिले-

१ दो वर्ण परस्पर निकट होने से मिल जाते हैं, उस का नाम संधि है। जिस में स्वरों का मेल होता है वह स्वर सन्धि और जिस में व्यञ्जन का मेल होता है वह हल्सन्धि कहाजाता है।

वार) से अय्, अव्, आय्, आव् ये आदेश हों अर्थात् (उन की जगहपर होजावें) अच् परे हो तो। जैसे-चे अनम्=च्-अय्--अनम्=चयनम् (इकट्ठा करना) लो--अनम्=ल्-अव्-अनम्=लवनम् (काटना) छेदना चै-अकः=च्-आय-अकः=चायकः (इकट्ठा करने वाला) लौ अकः ल्-आव्-अकः=लावकः ॥ (३) अदेङ् गुणः ॥१।१।२॥ अत् एङ् च गुणसञ्ज्ञः स्यात् ॥ अत (अ) और एङ् (ए, ओ) गुणसंज्ञक हों। अर्थात् इनको गुण कहते हैं (४) आद्गुणः ॥ ६।१।८७॥ अवर्णादचि परे पूर्व-परयोरेको गुणादेशः स्यात्। अवर्ण (ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत तीनों प्रकारका अकार) से अच् परे हो तो पूर्व और परके स्थान में एक गुण (३) आदेश हो। जैसे-मनुज-इन्द्रः=मनुज्-ए-न्द्रः=मनुजेन्द्रः (राजा) गङ्गा-उदकम्=गङ्-ओ-दकम्=गङ्गोदकम् (गङ्गाजल) यहां मनुजके जकार का अकार औरइन्द्रकी इ इनदोनोंको मिलकरएहोगया गङ्गाके अन्तका आ और उदकका उ इन दोनोंको मिलके ओ होगया ॥ (५) उरण् रपरः ॥ १।१।५१॥ उः स्थानेऽण् प्रसज्यमान एव रपरः प्रवर्त्तते ॥ ऋके स्थानमें जो अण् (अ, इ, उ) आदेश हो वह रपर् हुआही प्रवृत्त हो (अर्, इर्, उर्) इसमें अण् प्रत्याहारके अक्षरों से परे र् दिखलाया है। जैसे-कृष्ण-ऋद्धिः=इसमें (४) से

गुण हुआ तब 'उरण् रपरः'-इस सूत्रसे कृष्ण के णकार का अकार और ऋद्धिकी ऋ को मिलकर अर् गुणहुआ तब कृष्णर्द्धिः(कृष्णकी वृद्धि)सिद्ध हुआ। एवमेव तव-ऌकारः=तव्--अल्--कारः=तवल्कारः (तेरी ऌ)। (६) लोपः शाकल्यस्य ॥ ८।३।१९॥ अवर्णपूर्वयोः पदान्तयोर्यवयोर्लोपोवाऽशि परे। अश् परे हो तो अवर्णपूर्वक पदान्त (सुप् और तिङ् जिसके अन्तमें-हों) यकार और वकारका विकल्पसे लोपहो। जैसे-कवे-इह=यहां(२ कव्-अय्-इह=कव-इह। और द्वितीय पक्ष में जहां यकारका लोप नहीं हुआ वहां कवयिह (हे कवि यहां)प्रभो-आशु=(२)प्रभ्-अव्-आशु= प्रभ आशु। द्वितीय पक्षमें प्रभवाशु (हे स्वामिन् जल्दी) ॥ (७) वृद्धिरादैच् ॥ १।१।१ ॥ आदैच् वृद्धिसंज्ञः स्यात् ॥ आ और ऐच् (ऐ औ) की वृद्धिसंज्ञा (इसम) हो ॥ (८) वृद्धिरेचि ॥ ६।१। ८८॥ आदेचि परे वृद्धिरेकादेशः स्यात् ॥ अवर्ण से एच्(ए ओ ऐ औ)परे हो तो पूर्व और परके स्थान में एक वृद्धि आदेश हो। जैसे-तत्र-एकदा=तत्रैकदा (वहां एक समय) गङ्गा-ओघः=गङ्गौघः (गङ्गाका वेग) आर्य्य-ऐश्वर्य्यम्=आर्य्यैश्वर्य्यम् (आर्योंकी प्रभुता,

१ जलतुम्बिकान्यायेन रेफस्योर्ध्वगमनम्।

इक़बाल)। पण्डित-औदार्यम्=पण्डितौदार्यम् (पण्डितकी उदारता, फ़ैयाज़ी)। यहां पर तत्र मेंत्र का अ और एकदा का ए इन दोनोंको मिलके ऐ हुई गङ्गाके अन्तका आ और ओघका ओ इन दोनों को मिलके औ हुआ। आर्घ्य के यकार का अ और ऐश्वर्य की ऐ इन दोनोंको मिलके ऐ हुई। पण्डित के त का अ और औदार्यका औ इन दोनों को मिल के औ हुआ॥(९)उपसर्गाः क्रियायोगे॥१।४।५९॥ प्रादयः क्रियायोगे उपसर्गसंज्ञाः स्युः॥ प्रादि क क्रिया के योग में उपसर्ग संज्ञक हों॥ प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्, नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप, एते प्रादयः॥ (१०) उपसर्गादृति धातौ॥ ६।१।९१॥ अवर्णान्तादुपसर्गादृकारादौ धातौ परे वृद्धिरेकादेशः स्यात्॥ अवर्ण है अन्त में जिस के ऐसे उपसर्ग (६) से ऋकार है आदि में जिसके ऐसा धातु परे हो तो पूर्व और परके स्थान मेंवृद्धि एकादेश हो। जैसे-प्र-ऋच्छति=प्र-आर्-च्छति=प्रार्च्छति प्र का अ और ऋच्छति की ऋ इन दोनों को मिलके आर् वृद्धि हुई॥ (११) एङि पररूपम्॥ ६।१।९४॥ आदुपसर्गादेङादौधातौ परे पररूपमेकादेशः स्यात्॥

अवर्णान्तउपसर्ग (९) से एङ् (ए, ओ) है आदि में जिसके ऐसा धातु परे हो तो पररूप एकादेश हो जैसे-प्र-एजते=प्रेजते (वह बहुत कांपता है) । उप-ओषति=उपोषति (वह बहुत जलता है) यहांपर प्र का अ एजते के एका ही रूप होगया। अर्थात् उसमें जा मिला। उपमें प का अ ओषति के ओ का ही रूप होगया अर्थात् ओ में जामिला (१२) अँचोऽन्त्यादि टि ॥ १ । १ । ६४ ॥ अचां मध्ये योन्त्यः स आदिर्यस्य तट्टिसंज्ञस्यात् ॥ अचों के मध्य में जो अन्तका अच् वह है आदि में जिस समुदाय के वह टिसंज्ञक हो । जैसे=मनस् यहां नकार में अकार अन्तका अच् है इससे आगे सकार हल् है उसके सहित अस्मात्र की टिसंज्ञा हुई (१३) ओमाङोश्च ॥ ६ । १ । ९५॥ ओमि आङि चात् परे पररूपमेकादेशः स्यात् ॥ अकारसे ओम् अथवा आङ परे हो तो पूर्व और परके स्थान में पररूप एकादेश हो । जैसे=शिवाय=ओम्-नमः=शिवायोन्नमः (कल्याणकारी परमात्माके लिये नमस्कृति) । शिव आङ्-इहि=शिव-एहि=(४) शिवेहि । यहां शिवाय के यकार का अकार पररूप ओकार होगया । ङ् की इत्संज्ञा होकर लोप हो जाता है आ और इहि की इको गुण होकर ए होता

है पश्चात् शिवके वकार का अकार पररूप होजाता है अर्थात् एका ही रूप होजाता है॥ (१४) अकः सवर्णे दीर्घः॥६।१।१०१॥ अकः सवर्णेऽचि परे पूर्वपरयोर्दीर्घ एकादेशः स्यात्। अक् (अ इ उ ऋ लृ) से सवर्ण अच् परे हो तो पूर्व तथा परके स्थान में दीर्घ एकादेश हो। जैसे प्रजा-अरिः=प्रजारिः (प्रजाका दुश्मन) कवि-ईशः=कवीशः। (कवियों का स्वामी) भानु= उदयः=भानूदयः (सूर्य का निकलना) भ्रातृ-ऋद्धिः= भ्रातृद्धिः (भाई की वृद्धि)॥ (१५) एङः पदान्तादति॥ ६।१।१०८॥ पदान्तादेङोऽति परे पूर्वरूपमेकादेशः स्यात्। पदान्त एङ् (ए ओ) से अ परे हो तो पूर्वरूप एकादेश हो। जैसे-नृपते-अव=नृपतेऽव। (हे राजन्! बचा) यहां ह्रस्व अ को पूर्वरूप एकार होगया। पूर्वरूप में अकार का "ऽ" यह चिह्न होता है। प्रभो अलम्=प्रभोऽलम्। (हे स्वामिन्! बस)॥ (१६) दूराद्धूते च॥८।२।८४॥ दूरात् सम्बोधने वाक्यस्य टेः प्लुतो वा स्यात्। दूर से पुकारने में वाक्य की टि(१२) को प्लुत विकल्प हो। जैसे--अत्रैहि देवदत्त ३!। जिस अक्षरके आगे तीनका अक्षर हो उसको प्लुत समझना चाहिये॥ (१७) प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम्॥६।१।१२४॥ एतेऽचि प्रकृत्या स्युः। प्लुतसंज्ञक और प्रगृह्य संज्ञक अच् परे हो तो नित्य प्रकृति से(ज्यों के त्यों) बने

रहैं। जैसे-आगच्छ चैत्र! ३ अत्र (हे चैत्र ! यहां आ) यहां चैत्र ३! अत्र वाक्य की टिको प्लुत होनेसे (१४) से सन्धि नहीं हुआ ॥ (१८) ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् ॥१।१ ११॥ ईदूदेदन्तं द्विवचनं प्रगृह्यसंज्ञं स्यात्। ईदन्त ऊदन्त और एदन्त जो द्विवचनान्त शब्द रूप प्रगृह्य (१७) संज्ञक हो। जैसे कवी-इमौ=कवी-इमौ। साधू-एतौ=साधू एतौ। सुते-इमे=सुते इमे। यहां पर प्रगृह्यसंज्ञा होने से (१४) कवी इमौ सन्धि नहीं हुआ। (१९) अदसो मात् ॥ १। १। १२ ॥ अस्मात् परावीदूतौ प्रगृह्यौ स्याताम् ॥ अदस् शब्दके मकार से परे ईदन्त और ऊदन्त शब्द प्रगृह्यसंज्ञक हों। जैसे-अमी-ईश्वराः=अमी ईश्वराः (ये मालिक)। अमू-आर्य्यौ=अमू आर्य्यौ (वे दोनों आर्य्य हैं) प्रगृह्यसंज्ञा होजाने से (१४, १) सन्धि कार्य्य नहीं हुआ ॥ (२०) ओत् ॥ १। १।१५ ॥ ओदन्तो निपातः प्रगृह्यःस्यात् ॥ ओदन्त जो निपात वह प्रगृह्यसंज्ञक हो। जैसे अहो-आश्चर्य्यम्=अहो आश्चर्य्यम् (अह! अचम्भेकी बात है) प्रगृह्य संज्ञाहोने से (२) से सन्धि नहीं हुआ। (२१) अचो रहाभ्यां द्वे ॥ ८। ४। ४५॥ अच उत्तरौ यौ रेफ-हकारौ ताभ्यामुत्तरस्य यरो द्वे वा स्याताम्॥ अच् से

परे जो रेफ हकार और रेफ हकारसे परे जो यर् उसको विकल्प से द्वित्व (दो) हो जैसे-वारि-अमलम्=वार् य्-अमलम्=(५) वार्य्यमलम् (साफ पानी) द्वितीयपक्ष में जहां द्वित्व न हुआ वहां वार्यमलम् । एवमेव । गौरी-औ=गौर्य्यौ अथवा गौर्यौ वहां रेफ से पर यकार को विकल्पसे द्वित्व हुआ है (२२) ऋत्यकः ॥ ६ । १ । १२७ ॥ ऋति परे अकः प्राग्वद् वा ॥ ऋकार परे हो तो पदान्त अक् को विकल्प से ह्रस्वादेश हो । जैसे ब्रह्मा-ऋषिः=ब्रह्मऋषिः । द्वितीय पक्ष में (४,५) सू० से ब्रह्मर्षिः (वेदके अर्थ को जानने वाला) ॥

इत्यच्सन्धिः ।

अथ हल्सन्धिः॥

(२३) स्तोःश्चुना श्चुः ॥ ८ । ४ । ३९ ॥ सकारतवर्गयोः शकारचवर्गाभ्यां योगे शकारचवर्गौ स्याताम् ॥ सकार और तवर्ग (त थ द ध न) को शकार और चवर्ग(च छ ज झ ञ)के योग (मेल) में शकार और चवर्गादेश हो। जैसे–बालस्-शेते=बालश्शेते (बालक सोता है)बालस्-चिनोति=बालश्चिनोति (लड़का इकट्ठा करता है) सत्-चित् = सच्चित्

(आत्मा) । जगत्-जीवनम्=जगज्जीवनम् (संसार में जीना) । शार्ङ्गिन्-जय = शार्ङ्गिञ्जय (हे धनुषधारी ! तूजीत)॥(२४)शात् ॥८।४।४३॥ शात् परस्य तवर्गस्य श्चुत्वं न स्यात्॥शकार से परे तवर्गका योग हो तो तवर्ग को चवर्णादेश न हो । जैसे विश्-नः= विश्नः (घुसना) । प्रश्-नः=प्रश्नः (पूंछना) ॥ (२५) ष्टुना ष्टुः ॥ ८ । ४ । ४० ॥ स्तोः ष्टुना योगे ष्टुःस्यात्॥ सकार और तवर्ग को षकार और टवर्ग के योग में षकार और टवर्ग(ट ठ ड ढ ण आदेश हो । जैसे-- बालस्-षष्ठः=बालष्षष्ठः (छठा बालक)। बालस्-- टीकते=बालष्टीकते । (बालक जाता है) पष्-ता=पेष्टा (पीसने वाला । तत्-टीका=तट्टीका (उसका तिलक) । चक्रिन्-ढौकसे=चक्रिण्ढौकसे (अधिचक्रधारी, हथियार वाला तू जाता है) ॥ (२६) न पदान्ताट्टोरनाम् ॥ ८ । ४ । ४२ ॥ पदान्ताट्टवर्गात्परस्याऽनामःस्तोः ष्टुर्न स्यात् । पदान्तटवर्ग से परे नाम शब्दके नकार को छोड़कर सकार और तवर्ग को षकार और टवर्गादेश न हो । जैसे-षट्-सन्तः=षट्सन्तः (छःहोते हुये) षट्-ते=षट् ते (वे छह) ॥ (२७) तोःषि ॥८। ४ । ४३॥तवर्गस्य षकारे परे न ष्टुत्वम् ॥ षकार परे हो तो तवर्गको षकार और टवर्गादेश न हो । जैसे

सन् षष्ठः=सन्षष्ठः (छठा होताहुआ)॥ यहांपर (२५) से नकार को णकार नहीं हुआ ॥ (२८) झलां जशोऽन्ते ॥ ८।२।३९॥ पदान्ते झलां जशः स्युः॥ पदान्त में झल् के स्थान में जश् आदेश हो। जैसे वाक्-ईशः=वागीशः (वाणीका स्वामी। (२९) यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा ॥ ८।४।४४॥ यरः पदान्तस्याऽनुनासिके परे अनुनासिको वा स्यात्॥ पदान्त यर् से अनुनासिक (ङ ञ ण न् म्) परे हो तो यर् को विकल्पसे अनुनासिकादेश हो। जैसे-एतत्-मतम् = एतन्मतम्। (यह माना) जब अनुनासिक न हुआ तब एतद्-मतम्। (२८) से दकार हुआ॥ (३०) तोर्लि ॥८।४।५९॥तवर्गस्य लकारे परे परसवर्णादेशःस्यात्॥ तवर्ग से लकारपरे हो तो परसवर्णादेश हो। जैसे-बृहत्-ललाटम्=बृहल्ललाटम् (बड़ा माथा) विद्वान्-लिखति=विद्वाँल्लिखति (विद्वान् लिखता है)॥ (३१) खरि च। ८।४।५४॥ खरि झलां चरः स्युः॥ खर् परे हो तो झलों को चर् आदेश हो। जैसे भेद्-तव्यम्=भेत्तव्यम् (फाड़ना चाहिये)॥ (३२) झयो होऽन्यतरस्याम्॥ ८।४। ६१॥ झयः परस्य हस्य वा पूर्वसवर्णः। झयसेपरे हकारको पूर्वसवर्णादेश विकल्प से हो। जैसे बृहत-

होमः=बृहद्धोमः (बड़ा हवन) द्वितीयपक्ष में (२८) से बृहद्होमः ॥ (३३) शश्छोऽटि ॥ ८ । ४ ।६३॥ झयःपरस्य शस्य छो वाऽटि। झय् से परे शकार को छकार विकल्प से हो अट् परे हो तो। जैसे-परिक्षित्-शासनम्=परिक्षिच् (२३) शासनम्=परिक्षिच्-छासनम्=परीक्षिच्छासनम् (परिक्षितकी आज्ञा) (३४) मोऽनुस्वारः ॥ ८ । ३ । २३ ॥ मान्तस्य पदस्याऽनुस्वारो हलि ॥ हल् पर हो तो पदान्त-मकार को अनुस्वार हो। जैसे--गृहम्--याति = गृहं--याति (घर को जाता है) ॥ (३५) नश्चाऽपदान्तस्य झलि ॥ ८ । ३ । २४ ॥ नस्य मस्य चापदान्तस्य झल्यनुस्वारः ॥ झल् परे हो तो अपदान्तनकार और मकारको अनुस्वारादेश हो। जैसे यशान्-सि=यशांसि (कीर्त्ति) अधिजिगाम्--सते= अधिजिगांसते (वह पढ़ना चाहता है) ॥ (३६) अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः ॥ ८ । ४ । ५९ ॥ यय् प्रत्याहारपरे हो तो अनुस्वार को परसवर्णादेश हो। जैसे शाम्-तः = शां (२५) तः = शान्तः (शान्ति-वाला) (३७) वा पदान्तस्य ॥ ८ । ४ । ५८ ॥ पदान्तस्य अनुस्वारस्य ययि परे परसवर्णो वा स्यात्। यय प्रत्याहार परे हो तो पदान्त अनुस्वार को विकल्प

से परसवर्णादेश हो। जैसे त्वम्–करोषि=त्वं (१४) करोषि–त्वङ्करोषि। पक्षमें त्वं करोषि (तू करता है)

इतिहल्सन्धिः।

अथ विसर्गसन्धिः॥

(३८) खरवसानयोर्विसर्जनीयः॥ ८। ३। १५॥ खरि अवसाने च पदान्तस्य रस्य विसर्गः। खर् प्रत्याहार परे हो अथवा अवसान में पदान्त रेफको विसर्ग हो। जैसे-वृक्षम्--छादति=वृक्षरु (४१) छादयति। वृक्षः (३८) छादयति=वृक्षस् (३९) छादयति=वृक्षश्छादयति (२१) (तरु ढांकता है)॥ (३९) विसर्जनीयस्य सः॥ ८। ३। ३४॥ विसर्जनीयस्य सः स्यात् खरि परे। खर्परे हो तो विसर्जनीय को सकारादेश हो। जैसे-बालः--तरति=बालस्तरति (लड़का तैरता है)॥ (४०) वा शरि॥ ८। ३। ३६॥ शरि परे विसर्गस्य विसर्गो वा॥ शर् प्रत्याहार परे हो तो विसर्ग को विकल्पके विसर्ग हो। जैसे बालः-शेते=बालःशेते पक्षमें बालस्–शेते=बालश्शेते (वह लड़का सोता है)॥ (४१) ससजुषो रुः॥ ८। ३। ६६॥ पदान्तस्य सस्य सजुषश्च रुः स्यात्॥ पदान्तसकार और सजुषशब्द के सकार को रु (र्)

आदेश हो। जैसे शिवस्–अर्च्यः=शिव-रु-अर्च्यः = (४२) अतोरोरप्लुतादप्लुते ॥ ६ । १ । ११३ ॥ अप्लुतादतः परस्य रोरुः स्यादप्लुतेऽति । ह्रस्व अकार से परे रु को उकारादेश हो ह्रस्व अकार परे हो तो । जैसे (४१) शिव-रु-अर्च्यः । इस स्थान में वकारके अन्तर्गत अप्लुत अकार से परे रु है और रु से आग अर्च्यका अप्लुत अकार है अतएव रुके स्थान में 'उ' हुआ तब शिव-उ-अर्च्यः(४)से शिवो-अर्च्यः(१५) शिवोऽर्च्यः (ईश्वर पूजनीय है) ॥ (४३) हशि च॥ ६ । १ । ११४ ॥ अप्लुतात् अतः परस्य रोः उःस्यात् हशि परे । अप्लुत अ से परे रु को उकारादेश हो हश् प्रत्याहार परे हो तो जैसे-शिवस्-वन्द्यः= इसमें प्रथम सकार के स्थान में (४१) से रु हुआ तब शिव-रु-वन्द्यः=शिव शब्दके वकार में जो अकार है वह अप्लुत है इससे परे रु है और रु से परे वन्द्यका वकार हश् प्रत्याहार में है तब रु के स्थान में उ, हुआ शिव-उ-वन्द्यः=(४) शिवोवन्द्यः(ईश्वर वन्दना करने योग्य है) ॥ (४४) भोभगोअघोअपूर्वस्य योऽशि॥ ८ । ३ । १७ ॥ एतत् पूर्वस्य रोर्यादेशोऽशि ॥ अश् परे हो तो भोस् भगोस् अघोस् तथा अवर्ण है पूर्व जिसके ऐसे रु के रेफ को यकारादेश हो । जैसे–भोस् आगच्छ= (४१) भोरु-आगच्छ=भो य्-आगच्छ (ओतो-

गार्ग्यस्य॥८।३।२०॥)भ।आगच्छ (हे आ । (४५) हलि सर्वेषाम्॥८।३।२२॥ भोभगोअघोअपूर्वस्य यस्य लोपः स्याद्धलि॥ हल् प्रत्याहार परे हो तो सर्व वैयाकरणों के मतमें भो भगो अघो और अवर्ण पूर्वक यकार का लोप हो। जैसे=भो भृत्य ! = (४१, ४४) (हे नौकर !) एवमेव भगोस् नमस्ते भगो नमस्ते (हे ऐश्वर्यवान् तेरे लिये प्रणाम है) ऐसी ही अघोस् याहि अघो याहि (रे तु आ)। बालास्-यत्र=(४१) बाला रु-यत्र=(४१) बाला य-यत्र=(४४) बाला यत्र (लड़के जहां) (४६) रो रि ॥८।३।१४॥रेफस्य रेफे परे लोपः॥ रेफ (र) से रेफ परे हो तो पूर्व रेफ का लोपहो। जैसे-पुनर् रमते=पुन—रमते (४७) ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः॥ ६।३।१११॥ ढरफयो-र्लोपनिमित्तयोः पूर्वस्याणोदीर्घः॥ लोप निमित्तक ढ और रेफ परे हो तो पूर्व अण को दीर्घ हो। जैसे-(४६) से पुन-रमते=पुनारमते (फिर खेलता है)। एवमेव पतिस् रम्यः=पति रु-(४१ रम्यः=रति(४६ रम्यः होकर (४७) से दीर्घ होकर पतीरम्यः (सुन्दर स्वामी एव-मेव। भानुस्-राजते=भानु रु-(४१)राजते=भानु ४६ राजते=भानू(४७) राजते (सूर्य चमकता है)॥

इति विसर्ग सन्धिः॥

अथ सुबन्तप्रकरणम् ।

(सर्वादि) प्रोनाउन ।

१ सर्व (सब) विश्व २ (सम्पूर्ण) उभ३ (दो) उभय ४(दो अवयव विशेष)डतर और डतम यह प्रत्यय हैं ये प्रत्यय जिनके अन्तमें होते हैं वे शब्द लिये जाते हैं जैसे-कतर ५ (दो में से कौन) ६ कतम ६ (सब में कौनसा) अन्य ७ (दूसरा) अन्यतर ८ (दो में से एक) इतर ९ (दूसरा) त्वत् १० त्व ११ (दूसरा) नेम १२ (आधा) सम १३ सिम १४ (सर्व) पूर्व १५ (पहिला) पर १६ (अगला) अवर १७ (अन्त का) दक्षिण १८ (दहिना) उत्तर १९ (बायां) अपर २० (द्वितीय)अधर २१ (नीचे) स्व २२ (अपना) अन्तर २३ (बीच) त्यद् २४ तद् २५ (वह) यद् २६ (जो) एतद् २७ इदम् २८ (यह) अदस् २९ (वह) एक ३० (एक) द्वि ३१ (दो) युष्मद् ३२ (तुम) अस्मद् ३३ (हम) भवतु ३४ (आप) किम् ३५ (कौन) ॥

इति सर्वादिः ।

(पुँल्लिङ्ग अकारान्त सर्वशब्दः)

सर्वः, सर्वौ, सर्वे १ । सर्वम्, सर्वौ, सर्वान् २ । सर्वेण, सर्वाभ्याम्, सर्वैः ३ । सर्वस्मै, सर्वाभ्याम्, सर्वेभ्यः ४ ।

सर्वस्मात्, सर्वाभ्याम्, सर्वेभ्यः ५। सर्वस्य, सर्वयोः, सर्वेषाम् ६। सर्वस्मिन्, सर्वयोः, सर्वेषु ७। हे सर्व ! हे सर्वौ, हे सर्वे ८। इसी प्रकार विश्व, अन्य, अन्यतर, इतर, कतर, कतम, सम, सिम, नेम और एक शब्द के रूप होते हैं।

(उभशब्दः) यह शब्द द्विवचन में ही आता है। उभौ १। उभौ २। उभाभ्याम् ३, ४, ५, उभयोः ६,७। (उभयशब्दः) इसमें द्विवचन नहीं होता ॥ उभयः, उभये १। उभयम्, उभयान् २। उभयेन, उभयैः ३। उभयस्मै, उभयेभ्यः ४। उभयस्मात्, उभयेभ्यः ५। उभयस्य, उभयेषाम् ६। उभयस्मिन्, उभयेषु ७। हे उभय ! हे उभये ! ८ ॥ पूर्व, पर अवर, दक्षिण, उत्तर, अपर, अधर, स्व, अन्तर, इन नव शब्दों के प्रथमा विभक्ति के बहुवचन पञ्चमी तथा सप्तमीके एक वचनमें भेद है। जैसे-पूर्वाः पूर्वे १। पूर्वात्-पूर्वस्मात्, ५। पूर्वे, पूर्वस्मिन् ७। शेषरूप सर्व के तुल्य होते हैं ॥ प्रथम=पहिला । चरम=पिछला । द्वितीय=दूसरा । तृतीय=तीसरा । अल्प=थोड़ा अर्ध-आधा । कतिपय=कुछ । उक्त प्रथमादि शब्दों के बहुवचन में भेद है। जैसे प्रथमाः, प्रथमे, शेष विभक्तियों के रूप बालक के समान होते हैं। द्वितीय और तृतीय शब्दों के चतुर्थी पञ्चमी तथा

सप्तमी विभक्ति के एकवचन में दो २ रूप होते हैं। जैसे-द्वितीयस्मै, द्वितीयाय ४। द्वितीयस्मात्, द्वितीयात् ५। द्वितीयस्मिन्, द्वितीये ७ तृतीयस्मै, तृतीयाय ४। तृतीयस्मात्, तृतीयात् ५। तृतीयस्मिन्, तृतीये ७ शेषरूप बालक के समान होते हैं॥

प्रकाशः=रोशनी। पङ्कजः=कमल। वैयात्यम्=बेशर्मी। उपयोगः=इस्तेमाल। भारः=बोझा। निवासः=रहना। प्रतिबन्धः=रुकावट। प्रथितः=मशहूर। निहितम्=रक्खा हुआ। परस्परम्=आपसमें। दुर्विनीतः=अशिक्षित, बेतमीज। युगलम्।=जोड़ा। सम्पर्कः=मेल। प्रतिक्षणम्=हरवक्त। पर्य्यवसानम्=अन्त। कारागारः=जेलखाना। कर्त्तनम्=काटना। अर्जनम्=इकट्ठा करना। भेषजम्=दवा। खर्जनम्=खुजलाना। मार्जनम्=शुद्धकरना। भर्जनम्=भूनना, भूजना। विमर्दः=व्याघात, धक्कमधक्का। विमर्दनम्=घोटना। मर्दनम्=रगड़ना। रञ्जनम्=रंगना।

(निर्जर् शब्दः) जो बुड्ढा न हो देव।

निर्जरः, निर्जरौ निर्जरसौ, निर्जराः निर्जरसः १। निर्जरम् निर्जरसम्. निर्जरौ निर्जरसौ, निर्जरान् निर्जरसः २ निर्जरेण निर्जरसा, निर्जराभ्याम्, निर्जरैः ३। निर्जराय निर्जरसे, निर्जराभ्याम्, निर्जरेभ्यः ४। निर्जरात् निर्जरसः, निर्जराभ्याम्, निर्जरेभ्यः ५

निर्जरस्य निर्जरसः, निर्जरयोः निर्जरसोः, निर्जराणाम् निर्जरसाम् ६। निर्जरे, निर्जरसि निर्जरयोः निर्जरसोः, निर्जरेषु ७। हे निर्जर ! हेनिर्जरौ, हेनिर्जरसौ, हेनिर्जराः, हे निर्जरसः ८॥

(पु० आकारान्त विश्वपा शब्दः) ईश्वर ।

विश्वपाः, विश्वपौ, विश्वपाः १। विश्वपाम्, विश्वपौ, विश्वपः २। विश्वपा, विश्वपाभ्याम्, विश्वपाभिः ३ विश्वपे, विश्वपाभ्याम्, विश्वपाभ्यः ४ विश्वपः, विश्वपाभ्याम्, विश्वपाभ्यः ५। विश्वपः, विश्वपोः, विश्वपाम् ६। विश्वपि, विश्वपोः, विश्वपासु ७। हेविश्वपाः ! हेविश्वपौ, हे विश्वपाः ८। इसीप्रकार निधिपा (कोषाध्यक्ष) गोपा (ग्वाला) शंखध्मा (शंख बजाने वाला) आदि समस्त आकारान्त शब्दों के रूप होते हैं।

(भाषा बनाओ)

धर्मस्य प्रकाशाय विद्यां पठामि। अत्र पङ्कजस्योपयोगस्याऽऽवश्यकता नाऽस्ति। ते भारं तत्र कथं नयन्ति। अस्माकमत्र निवासे प्रतिबन्धोऽस्ति भवन्तः शाटानां कर्त्तने प्रथिताः सन्ति। कस्य पुस्तकानि निहितानि सन्ति। परस्परं यूयं विमर्दं कथमकार्ष्ट। खलस्य सम्पर्कः प्रतिक्षणं दुःखदो भवति। विश्वपि ते विश्वासो नास्ति॥

(संस्कृत बनाओ)

आपके व्याख्यान का कभी अन्त भी होगा। इस

शहर के जेलखाने में कितने बन्दी हैं। पापोंका इकट्ठा करना अच्छा न होगा। घरका शुद्ध करना सदा अच्छा है। ईश्वर में उसका विश्वास नहीं है। इस ख़ज़ाञ्ची के पास कितने रुपये हैं।

(हाहा शब्दः) शोक की आवाज़।

हाहाः, हाहौ, हाहाः १। हाहाम्, हाहौ, हाहान् २। हाहा, हाहाभ्याम्, हाहाभिः ३। हाहै, हाहाभ्याम्, हाहाभ्यः ४। हाहाः, हाहाभ्याम्, हाहाभ्यः ५। हाहाः, हाहौः, हाहाम् ६। हाहे, हाहौः, हाहासु ७। स० हे हाहाः! हे हाहौ, हे हाहाः॥ ८॥

(ह्रस्व इकारान्त असि शब्दः) तरवार।

असिः, असी, असयः १। असिम्, असी, असीन् २। असिना, असिभ्याम्, असिभिः ३। असये, असिभ्याम्, असिभ्यः ४। असेः, असिभ्याम्, असिभ्यः ५। असेः, अस्योः, असीनाम् ६। असौ, अस्योः, असिषु ७। स० हे असे! हे असी, हे असयः॥

इसीप्रकार–निधि (ख़ज़ाना) विधि (तरकीब) आधि (मनकी पीड़ा) व्याधि (बीमारी) उपाधि (पदवी) पयोधि (समुद्र) प्रणधि (दूत) सन्धि (मेल) अग्नि (आग) अहि (सांप) कवि (शायर) ग्रन्थि (गांठ) पाणि (हाथ) छदि (छत) दुर्मति (बेवकूफ़) गिरि (पहाड़) राशि (समूह) प्रतिनिधि

(एवजी) रवि (सूर्य) इकारान्त पुलिङ्ग शब्दों के रूप होते हैं॥

(उकारान्त वायु शब्दः) हवा।

वायुः, वायू, वायवः १। वायुम्, वायू, वायून् २। वायुना, वायुभ्याम्, वायुभिः ३। वायवे, वायुभ्याम्, वायुभ्यः ४ वायोः, वायुभ्याम्, वायुभ्यः ५। वायोः, वाय्वोः, वायूनाम् ६। वायौ, वाय्वोः, वायुषु ७ स० हे वायो! हे वायू! हे वायवः! इसीप्रकार-मन्यु (क्रोध) पशु (ढोर) ऊरु (जङ्घा) प्रभु (स्वामी) पटु (चतुर) बटु (बालक) चटु (प्यारा वचन) तन्तु (धागा) तर्कु (तकला) धातु (मस्दर) पङ्गु (लङ्गडा) पिचु (कपास) बन्धु (भाई) बाहु (भुजा) भविष्णु (होनहार) भीरु (डरपोक) मृत्यु (मौत) परमाणु (ज़र्रा) चाटुचटु (खुशामदी) असु, (प्राण) आखु (चूहा) इषु (बाण) क्रतु (यज्ञ) रिपु (दुश्मन) सूनु (लड़का) चरिष्णु (चालाक) उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप होते हैं॥

(सखिशब्दः) मित्र।

सखा, सखायौ, सखायः १। सखायम्, सखायौ, सखीन् २। सख्या, सखिभ्याम्, सखिभिः ३। सख्ये, सखिभ्याम्, सखिभ्यः ४। सख्युः, सखिभ्याम्, सखिभ्यः ५। सख्युः, सख्योः, सखीनाम् ६। सख्यौ, सख्योः, सखिषु ७। स० हेसखे! हे सखायौ, हे सखायः॥

(पतिशब्दः) मालिक ।

पतिः, पती, पतयः १। पतिम्, पती, पतीन् २। पत्या, पतिभ्याम्, पतिभिः ३। पत्ये, पतिभ्याम्, पतिभ्यः ४। पत्युः, पतिभ्याम्, पतिभ्यः ५। पत्युः, पत्योः, पतीनाम् ६। पत्यौ, पत्योः, पतिषु ७। स० हे पते! हे पती ! हे पतयः ! ॥

(भाषा बनाओ)

प्रभो ! पङ्गुरयं क्रतु कर्तुं वाञ्छति । पटो ! वटोरिदं शकटं भविष्यति। अस्य शाटस्य तन्तवो वरं न सन्ति। मम बाहोर्बलं भविष्यति तर्हि द्रक्ष्यामि । चाटुचटोर्वचनानि नो मन्यामहे। अयं तर्कुः कीदृशोऽस्ति। कस्य धातोरिदं रूपं भवति। तत्रत्यानां भीरूणां सूनूनामियं वार्त्ताऽस्ति। मृत्योर्वेला भवतु के जानन्ति। अस्माकमयमसिः सर्वेष्वसिषु वरमस्ति।

(संस्कृत बनाओ)

खज़ाने में इस समय कितना रुपया है। यह पदवी आप के लिये किस चतुर आदमी ने दी है। समुद्र में डरपोक आदमी कब जाते हैं। ऐसे काम बेवकूफ लड़कों के होते हैं। इस मकान की छत पर क्या कोई मनुष्य रहते हैं? । पहाड़ में जाकर आपने क्या२ देखा। उन लड़कों के हाथों में कौन २ पुस्तक हैं? ।

(बहुवचनान्त कति[1] शब्दः) कितने ।

कति १, कति २, कतिभिः ३, कतिभ्यः ४, कतिभ्यः ५। कतीनाम् ६, कतिषु ७।

(बहुवचनान्त त्रिशब्दः) तीन ।

त्रयः १, त्रीन् २, त्रिभिः ३, त्रिभ्यः ४, त्रिभ्यः ५, त्रयाणाम् ६, त्रिषु ७ ॥

(द्विवचनान्त द्विशब्दः) दो ।

द्वौ १, द्वौ २, द्वाभ्याम् ३,४,५, द्वयोः ६,७ ॥

(ईकारान्त पपीशब्दः) सूर्य ।

पपीः, पप्यौ, पप्यः १ । पपीम्, पप्यौ, पपीन् २ । पप्या, पपीभ्याम्, पपीभिः ३ । पप्ये, पपीभ्याम्, पपीभ्यः ४। पप्यः, पपीभ्याम्, पपीभ्यः ५। पप्यः, पप्योः, पप्याम् ६। पपी, पप्योः, पपीषु ७। स० हे पपीः, हे पप्यौ, हे पप्यः ॥

कुविन्दः=जुलाहा। नेजकः=रजकः,=धोबी। सन्दर्भः= रचनम्, बनाना । संरम्भः=कोपः, गुस्सा । समासः= संक्षेप, मुख्तसिर । व्यासः=विस्तार, फैलाव । वैषम्यः=विरोधः, बरखिलाफ। कोविदारः=कचनाल । गताक्षरः=मूर्ख । पेचकः=उलूकः, उल्लू । परिवादः= असूया, निन्दा । अलीकम्=मृषा, झूठ । प्रतीकारः=

[1] इसके तीनों लिङ्गों में समान रूप होते हैं।

प्रायश्चित्तम्, उपाय। प्रणयः=स्नेह। आयासः=परिश्रम। प्रयासः=प्रयत्न॥

(बहुश्रेयसी शब्दः)

बहुत कल्याणप्रद स्त्रियों वाला।

बहुश्रेयसी, बहुश्रेयस्यौ, बहुश्रेयस्यः १। बहुश्रेयसीम्, बहुश्रेयस्यौ, बहुश्रेयसीन् २। बहुश्रेयस्या, बहुश्रेयसीभ्याम्, बहुश्रेयसीभिः ३ बहुश्रेयस्यै, बहुश्रेयसीभ्याम्, बहुश्रेयसीभ्यः ४। बहुश्रेयस्याः, बहुश्रेयसीभ्याम्, बहुश्रेयसीभ्यः ५। बहुश्रेयस्याः, बहुश्रेयस्योः, बहुश्रेयसीनाम् ६। बहुश्रेयस्याम्, बहुश्रेयस्योः, बहुश्रेयसीषु ७। स० हे बहुश्रेयसि! हे बहुश्रेयस्यौ, हे बहुश्रेयस्यः। इसी प्रकार अतिलक्ष्मी शब्द के रूप होते हैं, प्रथमा में अतिलक्ष्मीः रूप होता है।

(संस्कृत बनाओ।)

आप जानते हैं सूर्य कितने हैं?। जी हां जानता हूं बहुत हैं। यहां के जुलाहों का काम कैसा है। आपका धोबी कपड़ों को कब देगा, क्योंकि हमको शीघ्र ही आवश्यकता है। इस किताब की रचना कैसी होगी यह मैं जानना चाहता हूं। गुस्से से आपस में विरोध होता है अतएव आप ऐसा न करें। तुम हमारी निन्दा क्यों करते हो।

(भाषा बनाओ)

अहं समासेन वदिष्यामि न तु व्यासेन । वार्त्तेयं गताक्षराणामस्त्यतो वयं न श्रोष्यामः । अयं पेचकः साधूनां सदा परिवादं करोत्यतोऽस्य भेषजमस्माभिः कर्त्तव्यम् । तेषां पङ्गूनां वचनान्यलीकानि न च सत्यानि भवतामाशास्य प्रणयस्य च ते श्लाघामकार्षुः कतीनां मनुष्याणामत्र भोजनं भविष्यति द्वयोरथवा त्रयाणाम् ? ॥

(प्रधी शब्दः) महाबुद्धिमान् ।

प्रधीः, प्रध्यौ, प्रध्यः १ । प्रध्यम्, प्रध्यौ प्रध्यः २ । प्रध्या, प्रधीभ्याम्, प्रधीभिः ३ । प्रध्ये, प्रधीभ्याम्, प्रधीभ्यः ४ । प्रध्यः, प्रधीभ्याम्, प्रधीभ्यः ५ । प्रध्यः, प्रध्योः, प्रध्याम् ६ । प्रध्यि, प्रध्योः, प्रधीषु ७ । स० हे प्रधीः, हे प्रध्यौ, हे प्रध्यः । इसी प्रकार ग्रामणी (गांव का मालिक) सेनानी (फौज का अफसर) के रूप होते हैं, परन्तु सप्तमी के एकवचन में भेद है । जैसे=ग्रामण्याम् । सेनान्याम् ।

(नी शब्दः) लेजानेवाला ।

नीः, नियौ, नियः १ । नियम्, नियौ, नियः २ । निया, नीभ्याम्, नीभिः ३ । निये, नीभ्याम्, नीभ्यः ४ । नियः, नीभ्याम्, नीभ्यः ५ । नियः, नियोः, नियाम् ६ ।

नियाम्, नियोः, नीषु ७। सं० हेनीः, हेनियौ, हेनियः॥

(सुश्री शब्दः) श्रेष्ठशोभायुक्त ।

सुश्रीः, सुश्रियौ, सुश्रियः १। सुश्रियम्, सुश्रियौ, सुश्रियः २ । सुश्रिया, सुश्रीभ्याम्, सुश्रीभिः ३ । सुश्रियै, सुश्रीभ्याम्, सुश्रीभ्यः ४ सुश्रियः, सुश्रीभ्याम्, सुश्रीभ्यः ५ । सुश्रियः सुश्रियोः, सुश्रियाम् ६ । सुश्रियि, सुश्रियोः, सुश्रीषु ७। सं० हे सुश्रीः! सुश्रियौ, हे सुश्रियः ! इसीप्रकार यवक्री (जौ खरीदनेवाला) शुद्धधी (पवित्र बुद्धिवाला) सुधी अच्छी बुद्धिवाला) शब्दोंके रूप होते हैं ॥

(सुखी शब्दः) सुखकी इच्छा करनेवाला ।

सुखीः, सुख्यौ, सुख्यः १। सुख्यम्, सुख्यौ सुख्यः २। सुख्या. सुखीभ्याम्, सुखीभिः ३ । सुख्ये, सुखीभ्याम्, सुखीभ्यः ४। सुख्युः, सुखीभ्याम्, सुखीभ्यः ५ । सुख्युः, सुख्योः, सुख्याम् ६ । सुख्यि, सुख्योः, सुखीषु ७ सं० हे सुखीः, हे सुख्यौ, हे सुख्यः । इसीप्रकार सुती (पुत्रकी इच्छा करने वाला) शब्दके रूप समझो॥

(क्रोष्टु शब्दः) शृगाल, स्यार ।

क्रोष्टा, क्रोष्टारौ, क्रोष्टारः १। क्रोष्टारम्, क्रोष्टारौ, क्रोष्टून् २। क्रोष्टुना क्रोष्ट्रा, क्रोष्टुभ्याम्, क्रोष्टुभिः ३ । क्रोष्टवे क्रोष्ट्रे, क्रोष्टुभ्याम् क्रोष्टुभ्यः ४ । क्रोष्टोः क्रोष्टुः, क्रोष्टुभ्याम्, क्रोष्टुभ्यः ५ । क्रोष्टोः क्रोष्टुः, क्रोष्ट्वोः क्रोष्ट्रोः, क्रोष्टूनाम् ६ । क्रोष्टौ क्रोष्टरि, क्रोष्ट्वोः क्रोष्ट्रोः,

क्रोष्टुषु ७। स० हे क्रोष्टो ! हे क्रोष्टारौ, हे क्रोष्टारः।

अनुनयः=विनयः,=आजिजी। नीहारः=कुहिरा। प्रातराशः=कलेवा, सुबह का भोजन। प्रचयः=समूह। प्राचीनम्=पुराना। अर्वाचीनम्=नया। उपचयः= वृद्धि, तरक्की। अपचयः=हानि, नुकसान। बीजम्= कारण। पर्यवस्था=विरोध। बहिरङ्गम्=बाहरी। अन्तरङ्गम्=भीतरी। कुङ्कुमम्=केशर। पर्युषितम्=बासी। अरण्यम्=वन। विचक्षणः=होशियार। कृपणः=सूम। पाणिपीडनम्=विवाह। इषीका=सींक। वितानः= तम्बू। श्रान्तः=थका हुआ। दलम्=पत्र। वार्षिकम् = सालाना। उपयोगः-इस्तेमाल। वियोगः=जुदाई। प्रयोगः=नुसखा। नियोगः-आज्ञा। पटहः=ढोल॥ झल्लकम्=मजीरा महर्घम्=महंगा। सुलभम्=सस्ता। क्लेदनम्=भिगोना। उपालम्भः=शिकायत। आरोहः= ऊंचाई। परिणाहः=मुटाई। आयामः = लम्बाई। विस्तृतिः = चौड़ाई। चित्तम्=तबीयत। चाक्षुषम्= नेत्रका॥

(ऊकारान्त हूहू शब्दः) हूहू करनेवाला।

हूहूः, हूहौ, हूहः १। हूहूम्, हूहौ, हूहून् २। हूहा, हूहूभ्याम्, हूहूभिः ३। हूह्वे, हूहूभ्याम्, हूहूभ्यः ४। हूह्वः, हूहूभ्याम्, हूहूभ्यः ५। हूह्वः, हूह्वोः, हूह्वाम् ६। हूह्वि, हूह्वोः, हूहूषु ७। स० हे हूहूः! हे हूह्वौ, हे हूह्वः॥

(अतिचमू शब्दः) बहुत सेनावाला ।

अतिचमूः, अतिचम्वौ, अतिचम्वः १ । अतिचमूम्, अतिचम्वौ, अतिचमून् २। अतिचम्वा, अतिचमूभ्याम्, अतिचमूभिः ३। अतिचम्वै, अतिचमूभ्याम्, अतिचमूभ्यः ४ । अतिचम्वाः, अतिचमूभ्याम्, अतिचमूभ्यः ५। अतिचम्वाः, अतिचम्वोः, अतिचमूनाम् ६। अतिचम्वाम्, अतिचम्वोः, अतिचमूषु ७। स० हे अतिचमु ! हे अतिचम्वौ, हे अतिचम्वः।

(खलपूः, शब्दः) दुष्टोंको पवित्रकरनेवाला।

खलपूः, खलप्वौ, खलप्वः १। खलप्वम्, खलप्वौ, खलप्वः २। खलप्वा, खलपूभ्याम्, खलपूभिः ३। खलप्वे, खलपूभ्याम्. खलपूभ्यः ४। खलप्वः, खलपूभ्याम्, खलपूभ्यः ५। खलप्वः, खलप्वोः, खलप्वाम् ६। खलप्वि, खलप्वोः, खलपूषु ७। स० हे खलपूः! हे खलप्वौ, हे खलप्वः ! ८॥

इसीप्रकार सुलू (अच्छे प्रकार काटने वाला) वर्षाभू (वर्षा में पैदा होनेवाला)। दृन्भू (वज्र)। करभू (हाथमें उत्पन्न होनेवाला)। पुनर्भू (फिर-होनेवाला) शब्दों के रूप होते हैं॥

(स्वभूशब्दः) ईश्वर ।

स्वभूः, स्वभुवौ, स्वभुवः १। स्वभुवम्, स्वभुवौ, स्वभुवः २।

स्वभुवा, स्वभूभ्याम्, स्वभूभिः ३। स्वभुवे, स्वभूभ्याम्, स्वभूभ्यः ४। स्वभुवः, स्वभूभ्याम्, स्वभूभ्यः ५। स्वभुवः, स्वभुवोः, स्वभुवाम् ६। स्वभुवि, स्वभुवोः, स्वभूषु ७। सं० हे स्वभूः ! हे स्वभुवौ, हे स्वभुवः ॥

(ऋकारान्त धातृ शब्दः) धारण या पोषण करनेवाला ईश्वर।

धाता, धातारौ, धातारः १। धातारम्, धातारौ, धातॄन् २। धात्रा, धातृभ्याम्, धातृभिः ३। धात्रे, धातृभ्याम्, धातृभ्यः ४। धातुः, धातृभ्याम्, धातृभ्यः ५। धातुः, धात्रोः, धातॄणाम् ६। धातरि, धात्रोः, धातृषु ७। सं० हे धातः ! हे धातारौ, हे धातारः। इसीप्रकार कर्तृ = बनानेवाला भर्त्तृ = (पति) नप्तृ = (नाती, धवता) होतृ = होम करनेवाला। प्रशास्तृ = (हुक्म करनेवाला) वक्तृ (कहनेवाला) शब्दों के रूप होते हैं॥

(ऋकारान्त भ्रातृशब्दः) भाई।

भ्राता, भ्रातरौ, भ्रातरः १। भ्रातरम्, भ्रातरौ। इन पांच वचनों के सिवाय समस्त रूप धातृ के समान होते हैं। पितृ = पिता। जामातृ = दामाद। देवृ = देवर। नृ = मनुष्य शब्दों के रूप भ्रातृ के समान होते हैं, परन्तु नृशब्द के षष्ठी विभक्ति के बहुवचन में भेद है जैसे-नृणाम्, नॄणाम्।

(ऐकारान्त रै शब्दः) धन

राः, रायौ, रायः १। रायम्, रायौ, रायः २। राया, राभ्याम्, राभिः ३। राये, राभ्याम्, राभ्यः ४। रायः, राभ्याम् राभ्यः ५। रायः, रायोः रायाम् ६। रायि, रायोः, रासु ७। स० हे राः! हे रायौ, हे रायः॥

(ओकारान्त गो शब्दः) बैल, गाय।

गौः, गावौ, गावः १। गाम्, गावौ, गाः २। गवा, गोभ्याम्, गोभिः ३। गवे, गोभ्याम्, गोभ्यः ४। गोः, गोभ्याम्, गोभ्यः ५। गोः, गवोः, गवाम् ६। गवि, गवोः, गोषु ७। स० हे गौः! हे गावौ, हे गावः॥

(संस्कृत बनाओ)

इस वन में स्यार बहुत रहते हैं। उन दोनों बालकों में विनय बहुत है। आज रात्रि में कुहिरा गिरेगा। ये सब काम पुराने हैं एक भी नया नहीं विद्या की वृद्धि सबको करना चाहिये। उसके कहने में विरोध क्यों है।

(भाषा बनाओ)

किमत्र बीजं येन भवन्तोऽत्रनाऽऽगच्छन्ति?। प्रचुराणि बीजानि सन्ति तानीदानीं वक्तुं न वाञ्छामः। भवद्भिः प्रातराशः कृतः?। वायुनोत्खातास्तरवो विश्वेऽऽस्माकम्। बहिरङ्गं कार्यमस्त्यन्तरङ्गं वा? पर्युषितमशनं कदापि नो अशनीयम्। किं भवन्तः खलप्वः सन्ति।

इत्यजन्तपुँल्लिङ्गाः॥

अथाऽजन्तस्त्रीलिङ्गः(सर्वा शब्दः)

सर्वा, सर्वे, सर्वाः १ । सर्वाम्, सर्वे, सर्वाः २ । सर्वया, सर्वाभ्याम् सर्वाभिः ३ । सर्वस्यै, सर्वाभ्याम्, सर्वाभ्यः ४ । सर्वस्याः, सर्वाभ्याम्, सर्वाभ्यः ५ । सर्वस्याः, सर्वयोः, सर्वासाम् ६ । सर्वस्याम्, सर्वयोः, सर्वासु ७ । सं० हे सर्वे, हे सर्वे, सर्वाः ।

(इकारान्त मतिशब्दः) बुद्धि ।

मतिः, मती, मतयः १ । मतिम्, मती, मतीः २ । मत्या, मतिभ्याम्, मतिभिः ३ । मत्यै—मतये, मतिभ्याम्, मतिभ्यः ४ । मत्याः—मतेः, मतिभ्याम्, मतिभ्यः ५ । मत्याः—मतेः, मत्योः, मतीनाम् ६ । मत्याम् — मतौ, मत्योः, मतिषु ७ । हे मते ! हे मती, हे मतयः

इसी प्रकार धृति, (धीरज) कृति (करना) भृति (नौकरी) नति (प्रणाम) नीति (न्याय) जामि (स्त्रियां) व्रतति (वेल) तति (पङ्क्ति) छवि, (शोभा) जग्धि (भोजन) क्षिति (पृथ्वी) क्षति (हानि) यष्टि (लाठी) उष्टि (निवास) गति (चाल) समिति (सभा) प्राप्ति (लाभ) मुष्टि (घूँसा, मुक्का) स्मृति (याद्दास्त) विस्मृति (भूल) भ्रान्ति (झूँठी समझ) वृति (जीविका) कीर्त्ति (यश) दृष्टि (देखना) कृषि (खेती) प्रतिपत्ति (सिद्धि) विपत्ति (आफत) उपस्थिति (हाज़िरी) नीवि

१ इसी प्रकार–विश्वा, अन्या, अन्यतरा । इतरा, कतरा, कतमा, समा, सिमा, नेमा और एका शब्दों के रूप होते हैं ॥

(कमरबन्ध) चुल्लि (चुल्ला) पद्धति (रास्ता) गतिः (चाल) शब्दों के रूप होते हैं ॥

(ईकारान्त नदीशब्दः) दरिया ।

नदी, नद्यौ, नद्यः १ । नदीम्, नद्यौ, नदीः २ । नद्या, नदीभ्याम्, नदीभिः ३ । नद्यै, नदीभ्याम्, नदीभ्यः ४। नद्याः, नदीभ्याम्, नदीभ्यः ५ नद्याः, नद्योः, नदीनाम् ६ । नद्याम्, नद्योः, नदीषु ७ । हे नदि ! हे नद्यौ, हे नद्यः इसी प्रकार कुटी (कोठरी) मैत्री (दोस्ती) लिपी (छापी) शैली (रीति) श्रेणी (जमात) नारी (स्त्री सखी (सहेली) कर्त्री (करनेवाली) हर्त्री (चुरानेवाली) क्रोष्ट्री (शृगाली) पुत्री (लड़की) चोली (अंगिया) देहली (चौखट) महती (बडी) महिषी (भैंस) छागी (बकरी) गर्दभी (गदही) शष्कुली (पूड़ी) घृतचौरी (कचौड़ी) तन्त्री (सितार) आदि शब्दों के रूप होते हैं ॥

(श्रीशब्दः) शोभा

श्रीः, श्रियौ, श्रियः १ । श्रियम्, श्रियौ, श्रियः २ । श्रिया, श्रीभ्याम्, श्रीभिः ३ । श्रिये, श्रियै, श्रीभ्याम्, श्रीभ्यः ४ । श्रियः श्रियाः, श्रीभ्याम्, श्रीभ्यः ५ । श्रियः-श्रियाः, श्रियोः, श्रियाम्-श्रीणाम् ६ । श्रियि-श्रियाम्, श्रियोः, श्रीषु ७ ॥

(स्त्रीशब्दः) नारी ।

स्त्री, स्त्रियौ, स्त्रियः १। स्त्रियम्-स्त्रीम्, स्त्रियौ, स्त्रियः-स्त्रीः २। स्त्रिया, स्त्रीभ्याम्, स्त्रीभिः ३। स्त्रियै, स्त्रीभ्याम्, स्त्रीभ्यः ४। स्त्रियाः, स्त्रीभ्याम्, स्त्रीभ्यः ५। स्त्रियाः, स्त्रियोः, स्त्रीणाम् ६। स्त्रियाम्, स्त्रियोः, स्त्रीषु ७। स०-हे स्त्रि! हे स्त्रियौ, हे स्त्रियः।

(उकारान्त धेनुशब्दः) गाय ।

धेनुः, धेनू, धेनवः १। धेनुम्, धेनू, धेनूः २। धेन्वा, धेनुभ्याम्, धेनुभिः ३। धेन्वै-धेनवे, धेनुभ्याम्, धेनुभ्यः ४। धेन्वाः-धेनोः, धेनुभ्याम्, धेनुभ्यः ५। धेन्वाः-धेनोः, धेन्वोः, धेनूनाम् ६। धेन्वाम्-धेनौ, धेन्वोः, धेनुषु ७। स० हे धेनो! हे धेनू, हे धेनवः। इसी प्रकार रज्जु (रस्सी)

(ऊकारान्त वधूशब्दः) बहू ।

वधूः, वध्वौ, वध्वः १। वधूम्, वध्वौ, वधूः २। वध्वा, वधूभ्याम्, वधूभिः ३। वध्वै, वधूभ्याम्, वधूभ्यः ४। वध्वाः, वधूभ्याम्, वधूभ्यः ५। वध्वाः, वध्वोः, वधूनाम् ६। वध्वाम्, वध्वोः, वधूषु ७। स० हे वधु! हे वध्वौ, हे वध्वः! इसी प्रकार श्वश्रू (सास) भ्रू (भौंह) इसके रूप पु० स्वयम्भूके समान होते हैं। अलाबू तुम्बी) तनू (शरीर) खर्जू (खाज) शब्दों के रूप होते हैं।

(ऋकारान्त दुहितृ शब्दः) लड़की ।

दुहिता, दुहितरौ, दुहितरः १। दुहितरम्, दुहितरौ,

दुहितॄः २। दुहित्रा, दुहितृभ्याम्, दुहितृभिः ३। दुहित्रे, दुहितृभ्याम्, दुहितृभ्यः ४। दुहितुः, दुहितृभ्याम्, दुहितृभ्यः ५ दुहितुः, दुहित्रोः, दुहितॄणाम् ६ दुहितरि, दुहित्रोः, दुहितृषु ७। सं० हेदुहितः! हे दुहितरौ, हेदुहितरः। इसी प्रकार मातृ (मा)।

(स्वसृ शब्दः) बहिन।

स्वसा, स्वसारौ, स्वसारः १। स्वसारम्, स्वसारौ, स्वसॄः २। शेषरूप दुहितृवत्-

(ओकारान्त द्योशब्दः) आकाश।

द्यौः, द्यावौः, द्यावः १। द्याम्, द्यावौ, द्याः २। द्यवा, द्योभ्याम्, द्योभिः ३। द्यवे, द्योभ्याम्, द्योभ्यः ४। द्योः, द्योभ्याम्, द्योभ्यः ५। द्योः, द्यवोः, द्यवाम् ६। द्यवि, द्यवोः, द्योषु ७।

(औकारान्त नौशब्दः) नाव।

नौः, नावौ, नावः १। नावम्, नावौ नावः २। नावा, नौभ्याम्, नौभिः ३। नावे, नौभ्याम्, नौभ्यः ४। नावः, नौभ्याम्, नौभ्यः ५। नावः, नावोः, नावाम् ६। नावि, नावोः, नौषु ७।

नैर्मल्यम्=पवित्रता। मालिन्यम्=मलिनता। काठिन्यम्=कठिनता। आनुकूल्यम्=अनुकूलता। प्रातिकूल्यम्=प्रतिकूलता। प्राचुर्यम्=बहुतायत। दार्ढ्यम्=मज़बूती। नैर्बल्यम्=कमज़ोरी। पाण्डित्यम्=विद्वत्ता,

आलिमपना। मौर्ख्यम्=मूर्खता वैचित्र्यम्=विचित्रता, अजीवपना। वैशिष्ट्यम्=विशेषता। कौशल्यम्=कुशलता। कौटिल्यम्=कुटिलता। न्यूनाधिक्यम्=तरमीम। सौकर्यम्=आसानी वैपरीत्यम्=उलटा। आकस्मिकम्=अचानक। सुषिरम्=घुना हुआ। गर्त्तम्=गड्ढा। विनिमयः=बदला। अभिज्ञानम्=निदर्शन, नमूना। प्रहारः=चोट। विहारः=भ्रमण॥

इत्यजन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम्।

अथाजन्तनपुंसकलिङ्गप्रकरणम्।

(सर्वशब्दः) सब

सर्वम्, सर्वे, सर्वाणि १। सर्वम्, सर्वे, सर्वाणि २। शेष रूप पुँल्लिङ्गवत्॥

(कतरच्छब्दः) कौन।

कतरत्-द्, कतरे, कतराणि १। कतरत्-द्! कतरे, कतराणि१। शेषरूप सर्ववत्। एवमेव कतमत् इतरत् अन्यत् अन्यतरत शब्दों के भी रूप होते हैं॥

(आकारान्त श्रीपा शब्दः) धनपालककुल

श्रीपम्, श्रीपे, श्रीपाणि १, २ शेषरूप पुस्तकवत्।

(इकारान्त वारिशब्दः) पानी।

वारि, वारिणी, वारीणि १। वारि, वारिणी, वारीणि २। वारिणा, वारिभ्याम्, वारिभिः ३। वारिणे, वारिभ्याम्, वारिभ्यः ४ वारिणः, वारिभ्याम्, वारि-

भ्यः ५। वारिणः, वारिणोः, वारीणाम् ६। वारिणि, वारिणोः, वारिषु ७। सं० हेवारि ! हेवारे ॥

(दधिशब्दः) दही ।

दधि, दधिनी, दधीनि १। दधि, दधिनी, दधीनि २। दध्ना, दधिभ्याम्, दधिभिः ३। दध्ने, दधिभ्याम्, दधिभ्यः ४। दध्नः, दधिभ्याम्, दधिभ्यः ५। दध्नः, दध्नोः, दध्नाम् ६। दध्नि--दधनि, दध्नोः, दधिषु ७। इसीप्रकार अस्थि (हाड़) अक्षि (आंख) सक्थि (ऊरू) के रूप होते हैं और शेष इकारान्त नपुंसकलिङ्गशब्दों के रूप वारिवत् समझो ॥

(संस्कृत बनाओ)

मैंने और सब पाठशाला देखी हैं परंतु आपकी पाठशाला कभी भी नहीं देखी। मेरी बुद्धि में तुम्हारी यह बात नहीं आती। क्या वे सब हानि और लाभ को मानते हैं ?। उनकी याद्दाश्त बहुत अच्छी है। मैंने कई वार परीक्षा की है। तुमने लाठी उसकी मुष्टि में मारी थी। कमरबन्ध अच्छा नहीं लगता है। नदी में स्त्रियां स्नान करने को जाती हैं। तुम्हारी बहूकी अब तबियत कैसीहै ॥

(भाषा बनाओ)

भवतो दुहितुःपाणिपीडनं कस्मिन् मासे भविष्यति। अस्मार्क मातुरियमाज्ञा नाऽस्त्यतो वयं गन्तु

न वाञ्छामः। यज्ञदत्तस्य मैत्र्या मदीया महती हानिरभूत्। अनुनयन् लिखामि दलं प्रभो!। गताक्षराणां न शृणोमिवार्त्ताम्। अलीकं नेजः स्येदं कथनं विश्चं मया श्रुतम्॥

(उकारान्त मधुशब्दः) शहद।

मधु, मधुनी, मधूनि १ मधु, मधुनी, मधूनि २। मधुना, मधुभ्याम्, मधुभिः ३। मधुने, मधुभ्याम्, मधुभ्यः ४। मधुनः, मधुभ्याम्, मधुभ्यः ५। मधुनः, मधुनोः, मधूनाम् ६। मधुनि, मधुनोः, मधुषु ७। स० हे मधु--मधो!, हे मधुनी, हेमधूनि॥

(ऋकारान्त धातृशब्दः)

धातृ धातृणि, धातॄणि १। धातृ, धातृणी, धातॄणि २। धात्रा-धातृणा, धातृभ्याम्, धातृभिः ३। धातृणे-धात्रे, धातृभ्याम्, धातृभ्यः ४। धातृणः-धातुः, धातृभ्याम्, धातृभ्यः ५। धातृणः-धातुः, धातृणोः-धात्रोः, धातॄणाम् ६। धातृणि-धातरि, धातृणोः-धात्रोः, धातृषु ७। स० हे धातः! हे धातृ! हे धातृणी! हे धातॄणि।

(प्ररिशब्दः) अधिक धनवाला कुल।

प्ररि, प्ररिणी, प्ररीणि १। प्ररि, प्ररिणी, प्ररीणि २। प्ररिणा, प्रराभ्याम्, प्रराभिः ३। प्ररिणे, प्रराभ्याम्, प्रराभ्यः ४। प्ररिणः, प्रराभ्याम्, प्रराभ्यः ५। प्ररिणः,

प्ररिणोः, प्ररीणाम् ६ । प्ररिणि, प्ररिणोः, प्ररिषु ७ । स० हे प्ररे-हे प्ररि ! हे प्ररिणी, हे प्ररीणि ॥

इत्यजन्तनपुंसकलिङ्गप्रकरणम् ।

अथ हलन्तपुँल्लिङ्गप्रकरणम् ।

(हान्त लिह् शब्दः) चाटनेवाला ।

लिट्-लिड्, लिहौ, लिहः १ । लिहम्, लिहौ, लिहः २ । लिहा, लिड्भ्याम्, लिड्भिः ३ । लिहे, लिड्भ्याम्, लिड्भ्यः ४ । लिहः, लिड्भ्याम्, लिड्भ्यः ५ । लिहः, लिहोः, लिहाम् ६ । लिहि, लिहोः, लिट्सु-लिट्त्सु ७ । स० हे लिट्, हे लिहौ, हे लिहः ।

(हान्त दुह् शब्दः) दुहनेवाला ।

धुक्-ग्, दुहौ, दुहः १ । दुहम्, दुहौ, दुहः २ । दुहा, धुग्भ्याम्, धुग्भिः ३ । दुहे, धुग्भ्याम्, धुग्भ्यः ४ । दुहः, धुग्भ्याम्, धुग्भ्यः ५ । दुहः, दुहोः, दुहाम् ६ । दुहि, दुहोः, धुक्षु ७ । स० हे धुग्-क्, हे दुहौ, हे दुहः ॥

(हान्त द्रुह् शब्दः) द्रोही ।

ध्रुक्-ध्रुग्, ध्रुट्-ध्रुड्, द्रुहौ, द्रुहः १ । द्रुहम्, द्रुहौ, द्रुहः २ । द्रुहा, ध्रुग्-ड्भ्याम्, ध्रुग्-ड्भिः ३ । द्रुहे, ध्रुग्-ड्भ्याम् ध्रुग्-ड्भ्यः ४ । द्रुहः, ध्रुग्-ड्भ्याम्, ध्रुग्-ड्भ्यः ५ । द्रुहः, द्रुहोः, द्रुहाम् ६ । द्रुहि, द्रुहोः, ध्रुट्सु-ध्रुट्त्सु, ध्रुक्षु ७ । स० हे ध्रुक्-ग्-ध्रुट्-ड्, हे द्रुहौ,

हे द्रुहः। इसीप्रकार मुह् (बेसुध होनेवाला) के रूप होते हैं।

(स्नुह्शब्दः) उगलनेवाला।

स्नुक्-ग्-ट्-ड्, स्नुहौ, स्नुहः १। स्नुहम्, स्नुहौ, स्नुहः २। स्नुहा, स्नुग्-ड्भ्याम्, स्नुग्-ड्भिः ३। स्नुहे, स्नुग्-ड्भ्याम्, स्नुग्-ड्भ्यः ४। स्नुहः, स्नुग्-ड्भ्याम्, स्नुग्-ड्भ्यः ५। स्नुहः, स्नुहोः, स्नुहाम् ६। स्नुहि, स्नुहोः, स्नुक्षु, स्नुट्त्सु, स्नुट्सु ७। स० हे स्नुक्-ग्-ट्-ड्, हे स्नुहौ, हे स्नुहः। इसी प्रकार स्निह् (स्नेहकर्त्ता) शब्द के रूप होते हैं॥

(विश्ववाह्शब्दः) सर्व संसारका धारक।

विश्ववाट्-ड्, विश्ववाहौ, विश्ववाहः १। विश्ववाहम्, विश्ववाहौ, विश्वौहः २। विश्वौहा, विश्ववाड्भ्याम्, विश्ववाड्भिः ३। विश्वौहे, विश्ववाड्भ्याम्, विश्ववाड्भ्यः ४। विश्वौहः, विश्ववाड्भ्याम्, विश्ववाड्भ्यः ५। विश्वौहः, विश्वौहोः, विश्वौहाम् ६। विश्वौहि, विश्वौहोः, विश्ववाट्त्सु विश्ववाट्सु ७। स० प्रथमावत्।

(अनडुह् शब्दः) बैल।

अनड्वान्, अनड्वाहौ, अनड्वाहः १। अनड्वाहम्, अनड्वाहौ, अनडुहः २। अनडुहा, अनडुद्भ्याम्, अनडुद्भिः ३। अनडुहे, अनडुद्भ्याम्, अनडुद्भ्यः ४। अनडुहः, अनडुद्भ्याम्, अनडुद्भ्यः ५।

अनडुहः, अनडुहोः अनडुहाम् ६। अनडुहि, अनडुहोः, अनडुत्सु ७। सं० हे अनड्वन्! हे अनड्वाहौ, हे अनड्वाहः॥

(भाषा बनाओ)

भवतोऽस्य शकटस्याऽनड्वाहौ वरं स्तः। भवन्तोऽवलेहं वाञ्छन्ति तर्हि तत्र गच्छन्तु। द्रुहि भवति तेषां विश्वासो न भविष्यति। इयं कस्य पुत्री देहल्यां तिष्ठति युवां जानीथः? अस्माकं कुट्यां तस्कराः प्रविष्टाः सन्ति सत्वरमागच्छन्तु भवन्तः। क्षिताविदानीं यूयं न शेध्वं कुतो वृश्चिका अत्र निर्गच्छन्ति। भवन्तावस्मिन् विषये मह्यं कां सम्मतिं दत्तः। तत्र तृतीयस्मिन् गृहे के गमिष्यन्ति, अहं तु न गच्छामि।

(संस्कृत बनाओ)

इस समाज का वार्षिक उत्सव कब होगा। आप जानते हैं धर्म के कामों में विघ्न हुआ ही करते हैं। इस संसार में हमारी रक्षा करनेवाला परमात्मा है। शहद में दही मिलाकर कैसा होता है। आपको इस समय कौन बीमारी है उसीका इलाज हो। इस शीशी की दवा नई है अथवा पुरानी।

(तुरासाह् शब्दः) सूर्य, बिजली।

तुराषाट्-ड्, तुरासाहौ, तुरासाहः १। तुरासाहम्, तुरासाहौ, तुरासाहः २। तुरासाहा, तुराषाड्भ्याम्,

तुराषाड्भिः ३। तुरासाहे, तुराषाड्भ्याम्, तुराषाड्भ्यः ४। तुरासाहः, तुराषाड्भ्याम्, तुराषाड्भ्यः ५। तुरासाहः, तुरासाहोः तुरासाहाम् ६। तुरासाहि, तुरासाहोः, तुराषाट्त्सु तुराषाट्सु ७। स० प्रथमावत्॥

(सुदिव् शब्दः) श्रेष्ठ आकाश।

सुद्यौः, सुदिवौ, सुदिवः १। सुदिवम्, सुदिवौ, सुदिवः २। सुदिवा, सुद्युभ्याम्, सुद्युभिः ३। सुदिवे, सुद्युभ्याम्, सुद्युभ्यः ४। सुदिवः, सुद्युभ्याम्, सुद्युभ्यः ५। सुदिवः, सुदिवोः, सुदिवाम् ६। सुदिवि, सुदिवोः, सुद्युषु ७। स० प्रथमावत्॥

(रेफान्त चतुर् शब्दः) चार।

चत्वारः १, चतुरः २, चतुर्भिः ३, चतुर्भ्यः ४, ५, चतुर्णाम् ६, चतुर्षु ७॥

(प्रशाम् शब्दः) अतिशान्त।

प्रशान्, प्रशामौ, प्रशामः १। प्रशामम्, प्रशामौ, प्रशामः २ प्रशामा, प्रशान्भ्याम्, प्रशान्भिः ३। प्रशामे, प्रशान्भ्याम्, प्रशान्भ्यः ४। प्रशामः, प्रशान्भ्याम्, प्रशान्भ्यः ५। प्रशामः, प्रशामोः, प्रशामाम् ६। प्रशामि, प्रशामोः, प्रशान्सु ७। स० हे प्रशान्! हे प्रशामौ! हे प्रशामः॥

(इदम् शब्दः) यह।

अयम्, इमौ, इमे १। इमम्, इमौ--एनौ, इमान्-एनान् २। अनेन--एनेन, आभ्याम्, एभिः ३। अस्मै, आभ्याम्, एभ्यः ४। अस्मात्, आभ्याम्, एभ्यः ५।

अस्य, अनयोः-एनयोः, एषाम् ६। अस्मिन्, अनयोः-एनयोः, एषु ७ ॥

(राजन् शब्दः) राजा।

राजा, राजानौ, राजानः १। राजानम्, राजानौ, राज्ञः २। राज्ञा, राजभ्याम्, राजभिः ३। राज्ञे, राजभ्याम्, राजभ्यः ४। राज्ञः राजभ्याम्, राजभ्यः ५। राज्ञः, राज्ञोः, राज्ञाम् ६। राज्ञि-राजनि, राज्ञोः, राजसु ७। स० हे राजन्! हे राजानौ, हे राजानः।

(यज्वन् शब्दः यज्ञ करनेवाला।

यज्वा, यज्वानौ, यज्वानः १। यज्वानम्, यज्वानौ, यज्वनः २। यज्वना, यज्वभ्याम्, यज्वभिः ३। यज्वने, यज्वभ्याम्, यज्वभ्यः ४ यज्वनः, यज्वभ्याम्, यज्वभ्यः ५। यज्वनः, यज्वनोः, यज्वनाम् ६। यज्वनि, यज्वनोः, यज्वसु ७। स० हे यज्वन्! हे यज्वानौ, हे यज्वानः। इसीप्रकार ब्रह्मन्शब्द के रूप होते हैं॥

(वृत्रहन् शब्दः) बादल का दूर करनेवाला।

वृत्रहा, वृत्रहणौ, वृत्रहणः १ वृत्रहणम्, वृत्रहणौ, वृत्रघ्नः २। वृत्रघ्ना, वृत्रहभ्याम्, वृत्रहभिः ३। वृत्रघ्ने, वृत्रहभ्याम्, वृत्रहभ्यः ४। वृत्रघ्नः, वृत्रहभ्याम्, वृत्रहभ्यः ५। वृत्रघ्नः, वृत्रघ्नोः, वृत्रघ्नाम् ६। वृत्रहणि-वृत्रघ्नि, वृत्रघ्नोः, वृत्रहसु ७। स० हे वृत्रहन्! हे वृत्रहणौ, हे वृत्रहणः। इसीप्रकार अर्यमन् (सूर्य) शब्द के रूप होते हैं।

(मघवन् शब्दः) सूर्य, बिजली ।

मघवान्,मघवन्तौ,मघवन्तः१।मघवन्तम्,मघवन्तौ, मघवतः २। मघवता, मघवद्भ्याम्, मघवद्भिः ३। मघवते, मघवद्भ्याम्, मघवद्भ्यः४। मघवतः, मघवद्भ्याम्,मघवद्भ्यः५।मघवतः,मघवतोः,मघवताम्६। मघवति, मघवतोः, मघवत्सु ७। सं० हे मघवन्! हे मघवन्तौ, हे मघवन्तः।

मघवा, मघवानौ, मघवानः १। मघवानम्,मघवानौ, मघोनः २। मघोना, मघवभ्याम्,मघवभिः ३। मघोने, मघवभ्याम्, मघवभ्यः ४। मघोनः, मघवभ्याम्,मघवभ्यः ५। मघोनः,मघोनोः,मघोनाम्६ मघोनि,मघोनोः, मघवसु ७। सं० हे मघवन्! हे मघवानौ, हे मघवानः॥

(युवन् शब्दः) जवान ।

युवा, युवानौ, युवानः १। युवानम्, युवानौ,यूनः २। यूना,युवभ्याम्, युवभिः ३। यूने, युवभ्याम्,युवभ्यः४। यूनः, युवभ्याम्, युवभ्यः ५। यूनः, यूनोः, यूनाम्६। यूनि, यूनोः, युवसु ७। सं० हे युवन्! हे युवानौ, हे युवानः।

(अर्वन् शब्दः) घोड़ा ।

अर्वा, अर्वन्तौ, अर्वन्तः १। अर्वन्तम्, अर्वन्तौ, अर्वतः २। अर्वता, अर्वद्भ्याम्, अर्वद्भिः ३। अर्वते, अर्वद्भ्याम्, अर्वद्भ्यः ४। अर्वतः, अर्वद्भ्याम्, अर्वद्भ्यः ५। अर्वतः, अर्वतोः, अर्वताम् ६। अर्वति,

अर्वतोः, अर्वत्सु ७। स० हे अर्वन्! हे अर्वन्तौ, हे अर्वन्तः॥

प्राची=पूर्व, मशरिक। प्रतीची=पश्चिम, मग़रिब। उदीची=उत्तर, शुमाल। अवाची=दक्षिण, जनूब। आग्नेयी=पूर्व और दक्षिण के बीच की दिशा। नैर्ऋती=दक्षिण और पश्चिम के मध्य की दिशा। वायवी=पश्चिम और उत्तरके बीचकी दिशा। ऐशानी=उत्तर और पूर्व के बीचकी दिशा॥ राजकीयम्=सरकारी। यौष्माकीणम्=तुम्हारा, रे, री। आस्माकीनम्=हमारा, रे, री। तावकीनम्=तेरा, रे, री। मामकीनम्=मेरा, रे, री। सायन्तनम्=शामका। प्रातस्तनम्=सुबहका। श्वस्तनम्=आगामीकलका। ह्यस्तनम्=गयेकलका। दोषातनम्=रात्रिका। ईषद्धसनम्=मुस्कराना। परिसर्गः=लपेटना। परिष्कारः=सजावट। मार्जनम्=शुद्ध करना। त्वाचम्=चमड़े का॥

(पथिन् शब्दः) मार्ग।

पन्थाः, पन्थानौ, पन्थानः १। पन्थानम्, पन्थानौ, पथः २। पथा, पथिभ्याम्, पथिभिः ३। पथे, पथिभ्याम्, पथिभ्यः ४। पथः, पथिभ्याम्, पथिभ्यः ५। पथः, पथोः, पथाम् ६। पथि, पथोः, पथिषु ७। इसी प्रकार मथिन् (बिलोने वाला) ऋभुक्षिन् (अन्तरिक्ष) शब्दों के रूप जानो॥

(नान्त[1] पञ्चन् शब्दः) पांच ।

पञ्च १, पञ्च २, पञ्चभिः ३, पञ्चभ्यः ४, ५, पञ्चानाम् ६, पञ्चसु ७। इसीप्रकार सप्तन् (सात) नवन (नौ) दशन् (दश) शब्दों के रूप होते हैं।

(अष्टन् शब्दः) आठ ।

अष्टौ, अष्ट १। अष्टौ, अष्ट २। अष्टभिः, अष्टाभिः ३ अष्टभ्यः, अष्टाभ्यः ४। अष्टभ्यः, अष्टाभ्यः ५। अष्टानाम् ६। अष्टसु, अष्टासु ७॥

(ऋत्विज् शब्दः) हवनकर्त्ता ।

ऋत्विक-ग्, ऋत्विजौ, ऋत्विजः १। ऋत्विजम्, ऋत्विजौ, ऋत्विजः २। ऋत्विजा, ऋत्विग्भ्याम्, ऋत्विग्भिः ३। ऋत्विजे, ऋत्विग्भ्याम्, ऋत्विग्भ्यः ४। ऋत्विजः, ऋत्विग्भ्याम्, ऋत्विग्भ्यः ५। ऋत्विजः, ऋत्विजोः, ऋत्विजाम ६। ऋत्विजि, ऋत्विजोः, ऋत्विक्षु ७। स प्रथमावत् ।

(भाषा बनाओ)

एभिर्बालकैरिदानीं जलं न पीतम् पीत्वाऽऽगमिष्यन्ति। आस्माकीना वडवा प्राच्यां गतोदीच्यां वा? वयमिदानीं प्रतीच्या आगच्छामोऽतो न विजानीमः स्यूतं तावकीनं किं कार्यमस्ति। साधन्तनस्य कार्यस्य स्मृतिरस्ति नास्ति वा? नगरस्यैशान्यां मुरादाबादस्य

१ पञ्चन्, सप्तन्, अष्टन्, नवन्, दशन् शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में समान होते हैं॥

राजकीया महती पाठशालास्ति । आस्माकीनानि पञ्च पुस्तकानि सन्ति ।

(संस्कृत बनाओ)

ये किस राजाके घोड़े हैं क्या आप जानते हैं । यह तुम्हारा आठ दिनका काम है या दश का? । इस वनमें चार रास्ते हैं इस लिये मैं किस रास्तेसे जाऊँ? । तुम सब आठ आदमियों में से युद्धके लिये कौन जायगा ? । जवानोंका काम जवान ही करते हैं लड़के नहीं करते ।

(युज् शब्दः) मिलनेवाला ।

युङ्, युञ्जौ, युञ्जः १ । युञ्जम्, युञ्जौ, युजः २ । युजा, युग्भ्याम्, युग्भिः ३ । युजे, युग्भ्याम्, युग्भ्यः ४ । युजः युग्भ्याम्, युग्भ्यः ५ । युजः, युजोः, युजाम् ६ । युजि, युजोः, युक्षु ७ । सं० प्रथमावत् ॥

(सुयुज् शब्दः) सम्यग् मिलाहुआ ।

सुयुक्-ग्, सुयुजौ, सुयुजः १ सुयुजम्, सुयुजौ, सुयुजः २ । सुयुजा, सुयुग्भ्याम्, सुयुग्भिः ३ । सुयुजे, सुयुग्भ्याम, सुयुग्भ्यः ४ । सुयुजः, सुयुग्भ्याम, सुयुग्भ्यः ५ । सुयुजः, सुयुजोः, सुयुजाम ६ । सुयुजि, सुयुजोः, सुयुक्षु ७ । सं० प्रथमावत ॥

(खञ्ज् शब्दः) लूला ।

खन्, खञ्जौ, खञ्जः १ । खञ्जम्, खञ्जौ खञ्जः २ । खञ्जा, खन्भ्याम्, खन्भिः ३ । खञ्जे, खन्भ्याम्, खन्भ्यः ४ । खञ्जः, खन्भ्याम, खन्भ्यः ५ । खञ्जः,

खञ्जोः, खञ्जाम ६। खञ्जि, खञ्जोः, खन्सु ७। स० प्रथमावत् ॥

(विश्वराज् शब्दः) ईश्वर।

विश्वाराट्=ड्, विश्वराजौ, विश्वराजः १। विश्वराजम्, विश्वराजौ, विश्वराजः २। विश्वराजा, विश्वाराड्भ्याम्, विश्वाराड्भिः ३। विश्वराजे, विश्वाराड्भ्याम्, विश्वाराड्भ्यः ४ विश्वराजः, विश्वाराड्भ्याम्, विश्वाराड्भ्यः ५। विश्वराजः, विश्वराजोः, विश्वराजाम् ६। विश्वराजि, विश्वराजोः, विश्वाराट्सु, विश्वाराट्त्सु ७। स० प्रथमावत् ॥

(भृस्ज् शब्दः) भुर्जी।

भृट्-ड्, भृज्जौ भृज्जः, १। भृज्जम्, भृज्जौ, भृज्जः २। भृज्जा, भृड्भ्याम्, भृड्भिः ३ भृज्जे, भृड्भ्याम्, भृड्भ्यः ४। भृज्जः, भृड्भ्याम, भृड्भ्यः ५। भृज्जः, भृज्जोः, भृज्जाम्६। भृज्जि भृज्जोः, भृट्त्सु भृट्सु७। स० प्रथमावत् ॥

(त्यद् शब्दः) वह।

स्यः, त्यौ, त्ये १। त्यम्, त्यौ, त्यान् २। त्येन, त्याभ्याम्, त्यैः ३। त्यस्मै, त्याभ्याम्, त्येभ्यः ४। त्यस्मात्, त्याभ्याम्, त्येभ्यः ५। त्यस्य, त्ययोः, त्येषाम् ६। त्यस्मिन्, त्ययोः, त्येषु ७।

(एतद् शब्दः) यह।

एषः, एतौ, एते १। एतम्--एनम्, एतौ, एनौ, एतान्

एनान् २। एतेन-एनेन, एताभ्याम्, एतैः ३। एतस्मै, एताभ्याम्, एतेभ्यः४। एतस्मात्, एताभ्याम्, एतेभ्यः५। एतस्य, एतयोः-एनयोः, एतेषाम् ६। एतस्मिन्, एतयोः एनयोः, एतेषु ७।

(सुपाद् शब्दः) अच्छे पैरवाला।

सुपात्-द् सुपादौ, सुपादः १। सुपादम्, सुपादौ, सुपदः २। सुपदा, सुपाद्भ्याम्, सुपाद्भिः ३। सुपदे, सुपाद्भ्याम्, सुपाद्भ्यः ४। सुपदः, सुपाद्भ्याम्, सुपाद्भ्यः ५। सुपदः, सुपदोः, सुपदाम् ६। सुपदि, सुपदोः, सुपात्सु ७। स० प्रथमावत्॥

(अग्निमथ् शब्दः) अग्नि मथनेवाला।

अग्निमद्-त, अग्निमथौ, अग्निमथः १। अग्निमथम्, अग्निमथौ, अग्निमथः २। अग्निमथा, अग्निमद्भ्याम्, अग्निमद्भिः ३ अग्निमथे, अग्निमद्भ्याम्, अग्निमद्भ्यः ४। अग्निमथः, अग्निमद्भ्याम्, अग्निमद्भ्यः ५। अग्निमथः, अग्निमथोः, अग्निमथाम् ६ अग्निमथि, अग्निमथोः, अग्निमत्सु ७।

(प्राञ्च् शब्दः) पूर्व दिशा को जानेवाला।

प्राङ्, प्राञ्चौ, प्राञ्चः १। प्राञ्चम्, प्राञ्चौ, प्राचः २। प्राचा, प्राग्भ्याम्, प्राग्भिः ३। प्राचे, प्राग्भ्याम्, प्राग्भ्यः ४। प्राचः, प्राग्भ्याम्, प्राग्भ्यः ५। प्राचः, प्राचोः, प्राचाम् ६। प्राचि, प्राचोः, प्राक्षु ७। स० प्रथमावत्।

(प्रत्यञ्च् शब्दः) उत्तर दिशा को जानेवाला।

प्रत्यङ्, प्रत्यञ्चौ, प्रत्यञ्चः १। प्रत्यञ्चम्, प्रत्यञ्चौ,

प्रतीचः २। प्रतीचा, प्रत्यग्भ्याम्, प्रत्यग्भिः ३। प्रतीचे, प्रत्यग्भ्याम्, प्रत्यग्भ्यः ४। प्रतीचः, प्रत्यग्भ्याम्, प्रत्यग्भ्यः ५। प्रतीचः, प्रतीचोः, प्रतीचाम् ६। प्रतीचि, प्रतीचोः, प्रत्यक्षु ७। स० प्रथमावत्।

(उदञ्च् शब्दः) उत्तर दिशाको जानेवाला।

उदङ्, उदञ्चौ, उदञ्चः १। उदञ्चम्, उदञ्चौ, उदीचः २। उदीचा, उदग्भ्याम्, उदग्भिः ३। उदीचे, उदग्भ्याम्, उदग्भ्यः ४। उदीचः, उदग्भ्याम्, उदग्भ्यः ५। उदीचः, उदीचोः, उदीचाम् ६। उदीचि, उदीचोः, उदक्षु ७। स० प्रथमावत॥

(सम्यञ्च् शब्दः) मनोहर।

सम्यङ्, सम्यञ्चौ, सम्यञ्चः १। सम्यञ्चम्, सम्यञ्चौ, समीचः २। समीचा, सम्यग्भ्याम्, सम्यग्भिः ३। समीचे, सम्यग्भ्याम्, सम्यग्भ्यः ४। समीचः, सम्यग्भ्याम्, सम्यग्भ्यः ५। समीचः, समीचोः, समीचाम् ६। समीचि, समीचोः, सम्यक्षु ७। स० प्रथमावत

(सध्र्यञ्च् शब्दः) साथ चलनेवाला।

सध्र्यङ्, सध्र्यञ्चौ, सध्र्यञ्चः १। सध्र्यञ्चम्, सध्र्यञ्चौ, सध्रीचः २। सध्रीचा, सध्र्यग्भ्याम्, सध्र्यग्भिः ३। सध्रीचे, सध्र्यग्भ्याम्, सध्र्यग्भ्यः ४। सध्रीचः, सध्र्यग्भ्याम्, सध्र्यग्भ्यः ५। सध्रीचः, सध्रीचोः, सध्रीचाम् ६। सध्रीचि, सध्रीचोः, सध्र्यक्षु ७। स० प्रथमावत्॥

(तिरश्चच् शब्दः) तिरछी चालवाला ।

तिर्यङ्, तिर्यञ्चौ, तिर्यञ्चः १। तिर्यञ्चम्, तिर्यञ्चौ, तिरश्चः २। तिरश्चा, तिर्यग्भ्याम्, तिर्यग्भिः ३। तिरश्चे, तिर्यग्भ्याम्, तिर्यग्भ्यः ४। तिरश्चः, तिर्यग्भ्याम्, तिर्यग्भ्यः ५। तिरश्चः, तिरश्चोः, तिरश्चाम् ६। तिरश्चि, तिरश्चोः, तिर्यक्षु ७। स० प्रथमावत् ।

(प्राञ्च् शब्दः) पूजावाचक ।

प्राङ्, प्राञ्चौ, प्राञ्चः १। प्राञ्चम्, प्राञ्चौ, प्राञ्चः २। प्राञ्चा, प्राङ्भ्याम्, प्राङ्भिः ३। प्राञ्चे, प्राङ्भ्याम्, प्राङ्भ्यः ४। प्राञ्चः, प्राङ्भ्याम्, प्राङ्भ्यः ५। प्राञ्चः, प्राञ्चोः, प्राञ्चाम् ६। प्राञ्चि, प्राञ्चोः, प्राङ्षु-प्राङ्क्षु ७। स० प्रथमावत् ॥

(क्रुञ्च् शब्दः) कुञ्ज पक्षी ।

क्रुङ्, क्रुञ्चौ, क्रुञ्चः १। क्रुञ्चम्, क्रुञ्चौ, क्रुञ्चः २। क्रुञ्चा, क्रुङ्भ्याम्, क्रुङ्भिः ३। क्रुञ्चे, क्रुङ्भ्याम्, क्रुङ्भ्यः ४। क्रुञ्चः, क्रुङ्भ्याम्, क्रुङ्भ्यः ५। क्रुञ्चः, क्रुञ्चोः, क्रुञ्चाम् ६। क्रुञ्चि, क्रुञ्चोः, क्रुङ्षु-क्रुङ्क्षु ७। स० प्रथमावत् ॥

लवपुरम्=लाहौर । जयपुरम्=जयपुर योधपुरम्=जोधपुर । उदयपुरम्=उदयपुर । लक्ष्मणपुरम्=लखनऊ । पुरुषपुरम् = पेशावर । कर्णपुरम्=कानपुर । वाराणसी=बनारस । प्रयागः इलाहाबाद कालिकता = कलकत्ता । मुम्बापुरी = बम्बई । मेराष्ट्रम्=मेरठ । अजमीढः = अजमेर । अर्गलपुरम् = आगरा ।

पाटलिपुत्रम् = पटना। अवन्तिपुरी=उज्जैन। कृष्ण-पुरी = मथुरा। इन्द्रप्रस्थम्=देहली।

(पयोमुच् शब्दः) बादल।

पयोमुक्-ग्, पयोमुचौ, पयोमुचः १। पयोमुचम्, पयोमुचौ, पयोमुचः २ पयोमुचा, पयोमुग्भ्याम्, पयोमुग्भिः ३। पयोमुचे, पयोमुग्भ्याम्, पयोमुग्भ्यः ४। पयोमुचः, पयोमुग्भ्याम्, पयोमुग्भ्यः ५। पयोमुचः, पयोमुचोः, पयोमुचाम् ६। पयोमुचि, पयोमुचोः, पयोमुक्षु ७ स० प्रथमावत्॥

(महत् शब्दः) बड़ा।

महान्, महान्तौ महान्तः १। महान्तम्, महान्तौ, महतः २ महता, महद्भ्याम्, महद्भिः ३। महते, महद्भ्याम्, महद्भ्यः ४। महतः, महद्भ्याम्, महद्भ्यः ५। महतः, महतोः, महताम् ६। महति, महतोः, महत्सु ७। स० हे महन्! हे महान्तौ, हे महान्तः।

(ददत् शब्दः) देता हुआ।

ददत्, ददतौ, ददतः १। ददतम्, ददतौ, ददतः २। ददता, ददद्भ्याम्, ददद्भिः ३। ददते, ददद्भ्याम्, ददद्भ्यः ४। ददतः, ददद्भ्याम्, ददद्भ्यः ५। ददतः, ददतोः, ददताम् ६। ददति, ददतोः, ददत्सु ७। स० प्रथमावत्। इसीप्रकार जक्षत् (खाताहुआ) जाग्रत् (जागता हुआ) दरिद्रत् (कंगाल होना हुआ) शासत् (शिक्षा करता हुआ) चकाशत् (प्रकाश करता हुआ) के रूप होते हैं।

(तादृश् शब्दः) तैसा ।

तादृक्-ग्, तादृशौ, तादृशः १ । तादृशम्, तादृशौ, तादृशः २ । तादृशा, तादृग्भ्याम्, तादृग्भिः ३ । तादृशे, तादृग्भ्याम्, तादृग्भ्यः ४ । तादृशः, तादृग्भ्याम्, तादृग्भ्यः ५ । तादृशः, तादृशोः तादृशाम् ६ । तादृशि, तादृशोः, तादृक्षु ७ । स० प्रथमावत् ॥

(विश् शब्दः) प्रवेश करता ।

विट्-विड्, विशौ, विशः १ । विशम्, विशौ, विशः २ । विशा, विड्भ्याम्, विड्भिः ३ विशे, विड्भ्याम्, विड्भ्यः ४ । विशः, विड्भ्याम्, विड्भ्यः ५ । विशः, विशोः, विशाम् ६ । विशि, विशोः, विट्त्सु-विट्सु ७ । स० प्रथमावत् ॥

(नश् शब्दः) नाशवान् ।

नक्-ग, ट-ड, नशौ, नशः १ नशम्, नशौ, नशः २ । नशा, नड्-ग्भ्याम्, नड्-ग्भिः ३ । नशे, नड्-ग्भ्याम्, नड्-ग्भ्यः ४ । नशः नड् ग्भ्याम्, नड्-ग्भ्यः ५ । नशः, नशोः, नशाम् ६ । नशि, नशोः, नक्षु, नट्त्सु-नट्सु ७ । स० प्रथमावत् ॥

(भाषा बनाओ)

युष्माकं युञ्जः खञ्जः सन्ति । एते राजानो विश्वराजि विश्वास कुर्वन्ति । तस्मै सुपदे नमोऽस्तु मे । एतस्याऽग्निमथो भृज्जः पात्रं वरं नास्ति । भवन्तस्रवो नगरात् प्राच्यां प्रतीच्यां उदीच्यां वा दिशि

सन्ति। तिरश्चां कुटिला गतिः। याहक् करणं ताहक् भरणमितीश्वरीयनियमः।

(षष् शब्दः) छः।

षट्-ड् १। षट्-ड् २। षड्भिः ३। षड्भ्यः ४। षड्भ्यः ५ षण्णाम् ६ षट्सु ७।

(पिपठिस् शब्दः) पढ़ने की इच्छा करनेवाला।

पिपठीः, पिपठिषौ, पिपठिषः १। पिपठिषम्, पिपठिषौ पिपठिषः २। पिपठिषा, पिपठीर्भ्याम्, पिपठीर्भिः ३। पिपठिषे पिपठीर्भ्याम्, पिपठीर्भ्यः ४। पिपठिषः, पिपठीर्भ्याम्, पिपठीर्भ्यः ५ पिपठिषः, पिपठिषोः, पिपठिषाम् ६। पिपठिषि, पिपठिषोः, पिपठीःषु-ष्षु ७। सं० प्रथमावत्॥

(चिकीर्ष् शब्दः) करने की इच्छा करनेवाला।

चिकीः, चिकीर्षौ, चिकीर्षः १ शेषरूप पिपठिषवत

(विद्वस् शब्दः) विद्वान्, मालूम।

विद्वान्, विद्वांसौ, विद्वांसः १ विद्वांसम्, विद्वांसौ, विदुषः २। विदुषा, विद्वद्भ्याम्, विद्वद्भिः ३ विदुषे, विद्वद्भ्याम्, विद्वद्भ्यः ४। विदुषः, विद्वद्भ्याम्, विद्वद्भ्यः ५। विदुषः, विदुषोः, विदुषाम् ६। विदुषि, विदुषोः, विद्वत्सु ७ हे विद्वन्! हे विद्वांसौ, हे विद्वांसः॥

(पुंस् शब्दः) पुरुष।

पुमान्, पुमांसौ, पुमांसः १। पुमांसम्, पुमांसौ, पुंसः २। पुंसा, पुंभ्याम्, पुंभिः ३। पुंसे, पुंभ्याम्,

पुंभ्यः ४। पुंसः, पुंभ्याम्, पुंभ्यः ५। पुंसः, पुंसोः, पुंसाम् ६। पुंसि, पुंसोः, पुंसु ७। हे पुमन्! हे पुमांसौ, हे पुमांसः।

(उशनस् शब्दः) शुक्रः।

उशना, उशनसौ, उशनसः १। उशनसम्, उशनसौ, उशनसः २। उशनसा, उशनोभ्याम्, उशनोभिः ३। उशनसे, उशनोभ्याम्, उशनोभ्यः ४। उशनसः, उशनोभ्याम्, उशनोभ्यः ५। उशनसः, उशनसोः, उशनसाम् ६। उशनसि, उशनसोः, उशनस्सु ७। स० हे उशनन्-उशनः-उशन, हे उशनसौ, हे उशनसः॥

(अनेहस् शब्दः) समय।

अनेहा, अनेहसौ, अनेहसः १। अनेहसम्, अनेहसौ, अनेहसः २। अनेहसा, अनेहोभ्याम्, अनेहोभिः ३। अनेहसे अनेहोभ्याम्, अनेहोभ्यः ४। अनेहसः, अनेहोभ्याम्, अनेहोभ्यः ५। अनेहसः, अनेहसोः, अनेहसाम् ६। अनेहसि, अनेहसोः, अनेहस्सु ७। स० हे अनेहः! हे अनेहसौ, हे अनेहसः।

(वेधस् शब्दः) विधाता।

वेधाः, वेधसौ, वेधसः १। शेषरूप अनेहस्वत्॥

(अदस् शब्दः) वह।

असौ, अमू, अमी १। अमुम्, अमू, अमून् २। अमुना, अमूभ्याम्, अमीभिः ३। अमुष्मै, अमूभ्याम्, अमीभ्यः ४। अमुष्मात्, अमूभ्याम्, अमीभ्यः ५।

अमुष्य, अमुयोः, अमीषाम् ६ । अमुष्मिन्, अमुयोः, अमीषु ७ ॥

(धनिन् शब्दः) धनवान् ।

धनी, धनिनौ, धनिनः १ । धनिनम्, धनिनौ, धनिनः २ । धनिना, धनिभ्याम्, धनिभिः ३ । धनिने, धनिभ्याम्, धनिभ्यः ४ । धनिनः, धनिभ्याम्, धनिभ्यः ५ । धनिनः, धनिनोः, धनिनाम् ६ । धनिनि, धनिनोः, धनिषु ७ । सं० हे धनिन् ! हे धनिनौ, हे धनिनः ।

(क्वसु प्रत्ययान्त तस्थिवस् शब्दः) ठहरा हुआ ।

तस्थिवान्, तस्थिवांसौ, तस्थिवांसः १ । तस्थिवांसम्, तस्थिवांसौ, तस्थुषः २ । तस्थुषा, तस्थिवद्भ्याम्, तस्थिवद्भिः ३ । तस्थुषे, तस्थिवद्भ्याम् तस्थिवद्भ्यः ४ । तस्थुषः, तस्थिवद्भ्याम्, तस्थिवद्भ्यः ५ । तस्थुषः, तस्थुषोः, तस्थुषाम् ६ । तस्थुषि, तस्थुषोः, तस्थिवत्सु ७ । सं० हे तस्थिवन् । हे तस्थिवांसौ, हे तस्थिवांसः ॥

(शुश्रुवस् शब्दः) जिसने सुना हो ।

शुश्रुवान्, शुश्रुवांसौ, शुश्रुवांसः १ । शुश्रुवांसम्, शुश्रुवांसौ, शुश्रूषः २ । शुश्रूषा, शुश्रुवद्भ्याम्, शुश्रुवद्भिः ३ । शुश्रूषे, शुश्रुवद्भ्याम्, शुश्रुवद्भ्यः ४ । शुश्रूषः, शुश्रुवद्भ्याम्, शुश्रुवद्भ्यः ५ । शुश्रूषः, शुश्रूषोः, शुश्रूषाम् ६ । शुश्रूषि, शुश्रूषोः, शुश्रुवत्सु ७ । सं० हे शुश्रुवन् ! ॥

बलिष्ठः=बहुत बलवान् । कनिष्ठः=छोटा । घनिष्ठः=बहुत गाढ़ा । दविष्ठम् = बहुत दूर । पटिष्ठः = बहुत चतुर । धर्मिष्ठः=बहुत धर्मात्मा । पापिष्ठः=बहुतपापी। भूयिष्ठम्=बहुत ही । हस्तक्षेपः=दस्तन्दाजी ॥

इति हलन्तपुँल्लिङ्गप्रकरणम् ।

अथ हलन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम् ।

(हान्त उपानह् शब्दः) जूता ।

उपानत्-द्, उपानहौ, उपानहः १ । उपानहम्, उपानहौ, उपानहः २ । उपानहा, उपानद्भ्याम्, उपानद्भिः ३। उपानहे, उपानद्भ्याम्, उपानद्भ्यः ४। उपानहः, उपानद्भ्याम्, उपानद्भ्यः ५। उपानहः, उपानहोः, उपानहाम् ६ । उपानहि, उपानहोः, उपानत्सु ७। स० प्रथमावत् ॥

(हान्त उष्णिह् शब्दः)

उष्णिक्-ग, उष्णिहौ, उष्णिहः १ । उष्णिहम्, उष्णिहौ, उष्णिहः २ । उष्णिहा, उष्णिग्भ्याम्, उष्णिग्भिः३ । उष्णिहे, उष्णिग्भ्याम्, उष्णिग्भ्यः ४। उष्णिहः, उष्णिग्भ्याम् उष्णिग्भ्यः ५। उष्णिहः, उष्णिहोः, उष्णिहाम् ६। उष्णिहि, उष्णिहोः, उष्णिक्षु ७। स० प्रथमावत् ।

(वान्तो दिव् शब्दः) आकाश ।

द्यौः, दिवौ, दिवः १। दिवम्, दिवौ, दिवः २। दिवा, द्युभ्याम्, द्युभिः ३ । दिवे, द्युभ्याम्, द्युभ्यः ४। दिवः,

द्युभ्याम्, द्युभ्यः ५। दिवः, दिवोः, दिवाम् ६। दिवि, दिवोः द्युषु ७ ॥

(रेफान्तो गिर्‌शब्दः) वचन ।

गीः, गिरौ, गिरः १। गिरम्, गिरौ, गिरः २। गिरा, गीर्भ्याम्, गीर्भिः ३। गिरे, गीर्भ्याम्, गीर्भ्यः ४। गिरः, गीर्भ्याम्, गीर्भ्यः ५। गिरः, गिरोः, गिराम् ६। गिरि, गिरोः, गीर्षु ७। एवं 'पुर्' शब्दस्य रूपाणि विज्ञेयानि।

(रेफान्तश्चतुर् शब्दः) चार ।

चतस्रः १। चतस्रः २। चतसृभिः ३। चतसृभ्यः ४। चतसृभ्यः ५। चतसृणाम् ६। चतसृषु ७ ॥

(मान्तः किम् शब्दः) कौन

का, के, काः १। काम्, के, काः २ कया, काभ्याम्, काभिः ३। कस्यै, काभ्याम्, काभ्यः ४। कस्याः, काभ्याम्, काभ्यः ५। कस्याः, कयोः, कासाम् ६। कस्याम्, कयोः, कासु ७ ॥

(मान्त इदम्‌शब्दः) यह ।

इयम्, इमे, इमाः १ इमाम्—एनाम्, इमे-एने, इमाः-एनाः २। अनया-एनया, आभ्याम, आभिः ३। अस्यै, आभ्याम्, आभ्यः ४। अस्याः, आभ्याम्, आभ्यः ५। अस्याः, अनयोः,-एनयोः, आसाम ६। अस्याम्, अनयोः, एनयोः, आसु ७ ॥

(दान्तस्त्यद् शब्दः) वह ।

स्या, त्ये, त्याः १। त्याम्, त्ये, त्याः २। त्यया,

त्याभ्याम्, त्याभिः ३। त्यस्यै, त्याभ्याम्, त्याभ्यः ४। त्यस्याः, त्याभ्याम्, त्याभ्यः ५। त्यस्याः, त्ययोः, त्यासाम् ६। त्यस्याम्, त्ययोः, त्यासु ७। एवमेव तद् यद् एतद्शब्दानां रूपाणि बोध्यानि ॥

(चान्तः वाच्शब्दः) वाणी।

वाक्-ग्, वाचौ, वाचः १। वाचम्, वाचौ, वाचः २। वाचा, वाग्भ्याम्, वाग्भिः ३ वाचे, वाग्भ्याम्, वाग्भ्यः ४ वाचः, वाग्भ्याम्, वाग्भ्यः ५। वाचः, वाचोः, वाचाम् ६ वाचि, वाचोः, वाक्षु ७

(पान्तोऽप् शब्दः) जल।

आपः १ अपः २। अद्भिः ३। अद्भ्यः ४। अद्भ्यः ५। अपाम् ६। अप्सु ७॥

(शान्तो दिश् शब्दः) दिशा।

दिक्-ग्, दिशौ, दिशः १ दिशम्, दिशौ, दिशः २। दिशा, दिग्भ्याम्, दिग्भिः ३। दिशे, दिग्भ्याम्, दिग्भ्यः ४। दिशः, दिग्भ्याम्, दिग्भ्यः ५। दिशः, दिशोः, दिशाम् ६। दिशि, दिशोः, दिक्षु ७।

(भाषाभ्यास)

भवतेयमुपानत् कियता मूल्येन क्रीता? तिसृभिर्मुद्राभिः चतस्रः शान्तिः। चतस्रोऽवस्था शरीरस्य वृद्धिर्यौवनं सम्पूर्णता ततः किञ्चित्परिहानिश्चेति। अद्य स्त्रीसमाजे कासां कासां विदुषीनामबलानां व्याख्यानानि भविष्यन्ति? श्रीमत्याः सरलादेव्याः सा-

वित्रीदेव्याः प्रियंवदायाश्च । वाचमुवाच कौत्सः । अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति । चतसृषु दिक्षु परिभ्रम्य समागतोऽहम् । आभ्यां बालिकाभ्यः फलानि ददानि?

(संस्कृत बनाओ)

आपने यह जूता कितने में लिया है । चार रुपये में । हे परमात्मन् ! आकाश शान्तिमय हो । देहकी चार दशा होती हैं वृद्धि यौवन सम्पूर्णता और चतुर्थी ह्रासयुक्त । आज महिला परिषद् में किन २ विदुषी स्त्रियोंके व्याख्यान होंग ? श्रीमती सरलादेवी सावित्रीदेवी और प्रियंवदाजीके । जलसे शरीरके अवयव शुद्ध होते हैं । चारोंदिशा में घूमकर आयाहूं ।

(शान्तो दृश्शब्दः) देखना ।

दृक्-ग्, दृशौ, दृशः १। दृशम्, दृशौ, दृशः २। दृशा, दृग्भ्याम्, दृग्भिः ३। दृशे, दृग्भ्याम्, दृग्भ्यः ४ दृशः, दृग्भ्याम्, दृग्भ्यः ५। दृशः, दृशोः, दृशाम् ६। दृशि, दृशोः, दृक्षु ७॥

(षान्तास्त्विष् शब्दः) प्रकाश ।

त्विट्-ड्, त्विषौ, त्विषः १ त्विषम्, त्विषौ, त्विषः २। त्विषा, त्विड्भ्याम्, त्विड्भिः ३। त्विषे, त्विड्भ्याम्, त्विड्भ्यः ४। त्विषः, त्विड्भ्याम्, त्विड्भ्यः ५। त्विषः, त्विषोः, त्विषाम् ६। त्विषि, त्विषोः, त्विट्त्सु-त्विट्सु ७। ८

(षान्तः सजुष् शब्दः) साथमें सेवता वा प्रीतिकर्त्ता

सजूः, सजुषौ, सजुषः १ सजुषम्, सजुषौ, सजुषः २। सजुषा, सजूर्भ्याम्, सजूर्भिः ३। सजुषे, सजूर्भ्याम्, सजूर्भ्यः

४। सजुषः, सजूर्भ्याम्, सजूर्भ्यः, ५। सजुषः, सजुषोः, सजुषाम् ६। सजुषि सजुषोः, सजूःषु-ष्षु ७ एवमाशीः।

(सान्तोऽदसूशब्दः) वद।

असौ, अमू, अमूः १। अमूम्, अमू, अमूः २। अमुना, अमूभ्याम्, अमूभिः ३। अमुष्यै, अमूभ्याम्, अमूभ्यः ४ अमुष्याः, अमूभ्याम्, अमूभ्यः ५। अमुष्याः, अमुयोः, अमूषाम् ६ अमुष्याम, अमुयोः, अमूषु ७।

इतिहलन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम् ॥

सहृदयः=दयालु। प्रवणः=झुका हुआ। चतुष्पथः=चौराहा। धावल्यम्=सफेदी। अधारः=नीरुः कथङ्कारम्=क्यों। अङ्कः=गोद। साधुवादः=मुबारिकवादी। शुभसंवादः=खुशखबरी। क्षुभितः=व्याकुल। हर्षः=खुशी। विषादः=रंज। प्रणिपातः=अदब। प्रकम्पनम्=कांपना। चङ्क्रमणम्=बार २ घूमना। तोलनम्=तोलना मापनम्=नापना। प्रभातम्=प्रातःकाल, सुबह। प्रवरः=श्रेष्ठ अच्छा॥

(भाषा बनाओ)

सहृदयानां मित्राणामुपदेशं हृदि धारयामि। चतुष्पथे सन्ति न वञ्चकाः। ददामि साधुवादांस्ते। कीदृशः शुभसंवादः श्रोतुमिच्छामि भो सखे ! हर्षविषादौ कथङ्कारं भवतः अभूत् प नम्रः प्रणिपातशिक्षया। विषं चङ्क्रमणं रात्रौ प्रभातप्रभूतं तमस्तदगतम्। वचस्तत्र प्रयोक्तव्यं यत्रोक्तं लभते फलम्। मद्यपानां मांसाशकानां च बुद्धिर्विपरीता भवति, अतएव बुद्धिमद्भिराभ्यां दूरं स्थेयम् ॥

(संस्कृत बनाओ) ।

मेहरवान मित्रों के उपदेशको हृदयमें धारण करता हूं। वे वञ्चक चौराहे पर नहीं हैं। आपके लिये मुबारिक बादी देता हूँ। हे मित्र ! कैसी खुशखबरी है उसको सुनना चाहता हूं। हर्ष विषाद क्यों होता है। प्रणिपात की शिक्षा से वह नम्र हुआ।

अथ हलन्तनपुंसकलिङ्गप्रकरणम् ।

(स्वनडुह् शब्दः) सुन्दर बैलवाला कुल ।

स्वनडुद्-त्, स्वनडुही, स्वनड्वांहि १ । स्वनडुद-त्, स्वनडुही, स्वनड्वांहि २ ॥ *

(वार्शब्दः) जल ।

वाः, वारी, वारि, १ । वाः वारी, वारि २ , वारा, वार्भ्याम्, वार्भिः ३ । वारे, वार्भ्याम्, वार्भ्यः ४ । वारः, वार्भ्याम्, वार्भ्यः ५ । वारः, वारोः, वाराम् ६ । वारि, वारोः, वार्षु ७ । स० प्रथमावत् ॥

(किम्शब्दः) कौन ।

किम्, के, कानि १ । किम्, के, कानि २ ॥

(इदम् शब्दः) यह ।

इदम्, इमे, इमानि १ । इदम्-एनत्, इमे--एने, इमानि--एनानि २ ॥

* प्रथमा तथा द्वितीया विभक्ति के जहां केवल रूप लिखे गये हों वहां शेषरूप पुँल्लिगवत् समझने चाहिएँ ॥

(एतद् शब्दः) यह ।

एतत्, एते, एतानि १ । एतत्, एते, एतानि २ ॥

(ब्रह्मन् शब्दः) ईश्वरः ।

ब्रह्म, ब्रह्मणी, ब्रह्माणि १। ब्रह्म, ब्रह्मणी, ब्रह्माणि २॥

(अहन् शब्दः) दिन ।

अहः, अह्नी-अहनी, अहानि १ । अहः, अह्नी-अहनी, अहानि २ । अह्ना, अहोभ्याम्, अहोभिः ३ । अह्ने, अहोभ्याम्, अहोभ्यः ४ । अह्नः, अहोभ्याम्, अहोभ्यः ५ । अह्नः, अह्नोः, अह्नाम् ६ । अह्नि, अह्नोः, अहस्सु ७ । सं० प्रथमावत् ॥

(दण्डिन् शब्दः) दण्डग्रहणकर्त्तृ कुल ।

दण्डि, दण्डिनी, दण्डीनि १ । दण्डि, दण्डिनी, दण्डीनि २

(सुपथिन् शब्दः) सुपथगामी कुल ।

सुपथि, सुपथी, सुपन्थानि १ । सुपथि, सुपथी, सुपन्थानि २।

(ऊर्ज् शब्दः) बलाकुल ।

ऊर्क्-ग्, ऊर्जी, ऊर्ञ्जि १ । ऊर्क्-ग्, ऊर्जी, ऊर्ञ्जि २। ऊर्जा, ऊर्ग्भ्याम्, ऊर्ग्भिः ३ । ऊर्जे, ऊर्ग्भ्याम्, ऊर्ग्भ्यः ४। ऊर्जः, ऊर्ग्भ्याम्, ऊर्ग्भ्यः ५। ऊर्जः, ऊर्जोः, ऊर्जाम् ६। ऊर्जि, ऊर्जोः, ऊर्क्षु ७। सं० प्रथमावत् ॥

(तद् शब्दः) वह ।

तत्, ते, तानि १ । तत्, ते, तानि २ ।

(यद् शब्दः) जो ।

यद्, ये, यानि १ । यद्, ये, यानि २ ।

(शकृत् शब्दः) विष्ठा, मल ।

शकृत, शकृती, शकृन्ति १। शकृत, शकृती, शकृन्ति २। शकृता, शकृद्भ्याम्, शकृद्भिः ३। शकृते, शकृद्भ्याम्, शकृद्भ्यः ४ शकृतः, शकृद्भ्याम्, शकृद्भ्यः ५। शकृतः, शकृतोः, शकृताम् ६। शकृति, शकृतोः, शकृत्सु ७। सं० प्रथमावत् ॥

(ददत् शब्दः) देताहुआ कुल ।

ददत्-द्, ददती, ददन्ति-ददति १। ददत्-द्, ददती, ददन्ति-ददति २।

(तुदत् शब्दः) पीड़ा देताहुआ कुल ।

तुदत्-द्, तुदन्ती, तुदती, तुदन्ति १। तुदत्-द्, तुदन्ती-तुदती, तुदन्ति २ शेषरूप ददत् शब्द के समान

(भात् शब्दः) प्रकाश ।

भात्-द्, भाती, भान्ती, भान्ति १। भात्-द्, भान्ती-भाती, भान्ति २। शेष रूप तुदत् पुंवत ॥

(पचत् शब्दः) पकाता हुआ कुल ।

पचत् पचन्ती, पचन्ति १। पचत्, पचन्ती, पचन्ति २।

(दीव्यत् शब्दः) खलता हुआ कुल ।

दीव्यत् द् दीव्यन्ती, दीव्यन्ति । दीव्यत्-द्, दीव्यन्ती, दीव्यन्ति २। शेषरूप तुदत्वत् ॥

(धनुष् शब्दः) चाप ।

धनुः, धनुषी, धनूंषि १। धनुः, धनुषी, धनूंषि २। धनुषा,

धनुर्भ्याम्, धनुर्भिः ३। धनुषे, धनुर्भ्याम्, धनुर्भ्यः ४। धनुषः, धनुर्भ्याम्, धनुर्भ्यः ५। धनुषः, धनुषोः, धनुषाम् ६। धनुषि, धनुषोः, धनुःषु-धनुष्षु ७। सं० प्रथमावत् ॥

इसीप्रकार चक्षुष् (आंख) हविष् (होमकी सामग्री) पयस् (जल) ओकस् (स्थान) शब्दों के रूप होते हैं॥

(सुपुंस् शब्दः) श्रेष्ठ पुरुषोंका कुल ।

सुपुम्, सुपुंसी, सुपुमांसि १। सुपुम् सुपुंसी, सुपुमांसि २। सुपुंसा, सुपुंभ्याम्, सुपुंभिः ३। सुपुंसे, सुपुंभ्याम्, सुपुंभ्यः ४। सुपुंसः, सुपुंभ्याम्, सुपुंभ्यः ५। सुपुंसः, सुपुंसोः, सुपुंसाम् ६। सुपुंसि, सुपुंसोः सुपुंसु ७। सं० प्रथमावत् ।

(अदस् शब्दः) वह ।

अदः अमू, अमूनि १। अदः अमू, अमूनि २।

इति हलन्तनपुंसकलिङ्गाः शब्दाः समाप्ताः ॥

याचनम्=मांगना। नर्त्तनम्=नाचना। कर्त्तनम्-काटना। निक्षेपणम्=फेंकना। प्रेषणम्=भेजना। वादनम्-बजाना। शयनम्=सोना। जागरणम्=जागना। अवलम्बनम्=सहारा। करणम्=करना। भरणम्=भरना। धरणम्=धरना। अध्ययनम्=पढ़ना। अध्यापनम्=पढ़ाना। मानम्=तौलना। दर्शनम्=देखना। निष्क्रमणम्=निकलना। प्रवेशनम्=घुसना। अवगुण्ठनम्=घूंघट। लुण्ठनम्=लेटना। आरोहणम्=चढ़ना। लम्बनम्-लटकना।

साधारणोपदेशः (१)

ईश्वरः सर्वव्यापकोऽस्ति। यौष्माकीणानि समानि

कार्याणि सर्वदा पश्यति, तेन किमप्यज्ञातं नास्ति। तद्-गृहं शीघ्रं नश्यति यस्मिन् गृहे सदा कलहो भवति। सज्जना यत्कर्मारभन्ते तन्मध्ये न त्यजन्ति। विपदि धैर्यमेव सहायतां ददाति। विद्यासमं नास्ति धनं जगत्याम्। प्रतिवासिभिः सह मेलनं रक्षणीयं जनैः समैश्च सह बन्धुवद् वार्त्तितव्यम्। शरीरं पवित्रं रक्षणीयं पवित्रैर्बालकैः सह सर्वे जनाः स्नेहं कुर्वन्ति अधर्मेण यद् धनमर्ज्यते तन्न तिष्ठति यथाऽऽगच्छति तथैव गच्छति।

साधारणोपदेशः (२)

कश्चिदपि जीवो न क्लेशनीयः, यथात्मनि सुखदुःखे भवतस्तथैव सर्वत्र विज्ञेयम्। यः शुद्धाभावेन कार्यं करोति जगदीश्वरस्तस्य सहायतां करोति परोपकारिणो जना, सुखिनो भवन्ति। योऽन्येषां वृद्धिं दृष्ट्वा विषीदति स सर्वदा दुःखं लभते। यत्कार्यं स्वकीयेऽधिकारे भवेत तत्सत्यतया कार्यम्। यो युष्माकं विश्वासं कुर्यात्तेन सह विश्वासघातो नहि कर्त्तव्यः। कटुभाषणं कदापि न विधेयम्, कटुवचनं शायकवद् हृदि क्षतं करोति। दुर्जनानां सङ्गतिः कदापि न कर्त्तव्या, अन्यथा हानिरेव भवति न च लाभः दुर्जनाः स्वमित्रैः सह विश्वासघातं कुर्वन्ति, अतएव इत्थंभूतेषु नरेषु विश्वासो न विधेयः धर्मकार्येषु विघ्ना बाहुल्येन भवन्ति, अतएव तत्करणे विलम्बो न कर्त्तव्यः।

१ इकट्ठा किया जाता है ॥ २ घाव। ३ धोखादेना।

शुभकर्मणां शुभं फलं भवति, अशुभकर्मणां चाशुभम्। मित्रं तदेवास्ति यदापत्काले न विजहाति[१]। शत्रुर्मधुरालाप[२]मपि कुर्यात्तथापि तस्य विश्वासो न कार्यः। महतामाज्ञा सर्वदा मन्तव्या अनेनैव युष्माकं कल्याणमस्ति। अविचार्य[३] किञ्चिदपि कार्यं न कार्यम्, नतु पश्चात्पश्चात्तापं करिष्यथ। असत्यं न भाषणीयम्, असत्य[४]भाषिणां कश्चिदपि विश्वासं न करोति। सविद्यस्य[५] नरस्य सर्वत्र प्रतिष्ठा भवति, मूर्खस्य[६] चाऽप्रतिष्ठा भवति। सर्वेषां शुभचिन्तकानां स्थैर्यं न चाऽशुभचिन्तकानाम्। मरणान्ते पापपुण्यमन्तरा नान्यत् सत्रा गच्छति। सर्वैः सह मधुरालापेन भाव्यं कटुवचनं केनापि सह नोच्चारणीयम्॥

साधारणोपदेशः (४)

सद्गुणैर्मनुष्याः पूज्यन्ते गुणैर्विना[७] कस्याप्यादरो न भवति। यथा शुकान् सारिकाश्च[८] जनाः पालयन्ति न च काकान्[९]। शिक्षाप्रदानि वाक्यानि न रोचन्ते[१०], इदं प्रायिकं दृष्टम् यथा यावत्कटुकं भेषजं न पीयते तावद् ज्वरो न नश्यति। महतां समीपे निवासेन लघवो[११]ऽपि महीयन्ते[१२], इदं प्रत्यक्षमस्ति यथा लता वृक्षसदृशी वर्धते। उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न

१ छोड़ता है। २ मीठा बोलना ३ विना विचार के ४। झूठ बोलने वालोंका। ५ पढ़े लिखका। ६ मूर्खकी। ७ विना। ८ मैना। ९ कव्वोंको। १० अच्छे लगते हैं। ११ छोटे। १२ बड़े होजाते हैं।

शान्तये। पयः पानं भुजङ्गानां[1] केवलं विषवर्धनम्। पापकर्माणि कृत्वा कश्चित् सुखं न कामयेत[2], स कथं सुखभाग्[3] भवेत् यथा-अर्कवृक्षा[4]रोपणेन किमसौ आम्रो भवितुमर्हति अपितु न।

साधारणोपदेशः (५)

वेदः सत्यविद्यानां पुस्तकमस्ति तस्य पठनं पाठनं श्रवणं श्रावणं च मनुष्यमात्रस्य परमधर्मोऽस्ति। सत्यग्रहणकरणे असत्यस्य च परित्यागे सर्वदा सर्वैरुद्यतैः भवितव्यम्। सर्वाणि कर्माणि धर्मानुसारेण सत्यमसत्यं च विचार्य कर्तव्यानि सर्वैः सह प्रीतिपूर्वकं, धर्मानुसारेण यथायोग्यं वर्त्तितव्यम्॥ शिशवः! प्रभाते उत्थाय परमेश्वरस्य ध्यानं कुरुत येन युष्मदर्थं नानाविधानि[5] वस्तूनि विरचितानि[6]। प्रातरुत्थाय यत्कार्यं क्रियते तस्मिन्मनः सम्यग् लगति यथा पठनं प्रभाते भवति न तथेतरस्मिन् काले संजायते प्रातःकाले यत् स्मियते न तच्छीघ्रं विस्मियते, बुद्धिश्च विवर्धते।

साधारणोपदेशः (६)

उपहासो[7] वैरस्य मूलमस्ति, अतएवोपहासः केनापि सह न कर्तव्यः। यदि कश्चिद् युष्माकमुपहासं कुर्यादेवं वैरं च मन्येत तथापि युष्माभिर्नैवं कार्यम्, एवमेव करणेन युष्माकं कल्याणं भविष्यति। यो नरोऽनुपकारे[8] उपकारं[9] करोति स उत्तमः, योऽनुपकारेऽनुपकारं करोति

१ सापोंका। २ चाहे ३ सुखी। ४ आकेड़का पेड़। ५ बहुत तरहके। ६ बनाये हैं। ७ हंसीठट्ठा। ८ बुराई। ९ भलाई।

स मध्यमः, यश्चोपकारेऽनुपकारं कुरुतेऽसौ नीचः। माता पित्राचार्याणां ये बालका आज्ञां मन्तारस्त एव सुखं भोक्तारो भवन्ति। अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः। चत्वारि तस्य वर्धन्त आयुर्विद्यायशो बलम्

साधारणोपदेशः (७)

दुःखे केवलमीश्वर एव साहाय्यं करोति तेनैव, अस्मदीयानि शरीराणि मातुरुदरे विरचितानि। तेनैव चसकलानीन्द्रियाणि दत्तानि। यैरिन्द्रियैरूपरसगन्धस्पर्शशब्दादीन् विषयान् गृह्णीमः। यथा नेत्रेण रूपं पश्यामः जिह्वयारसमास्वादामहे। नासिकया गन्धं जिघ्रामः त्वचा स्पर्शं विजानीमः। श्रोत्रेण शब्दं शृणुमः इमानि विश्वानीन्द्रियाणि ज्ञानसाधनानि सन्ति। नेत्रे विकारे सति वयं द्रष्टुमसमर्थाः सर्वं जगदन्धकारमयं प्रतीयते रसनायां विकारे जातेसति मधुराम्ललवणकटुकषायतिक्तरसान् विज्ञातुमसमर्थाः। एवमेव सर्वत्र विज्ञेयम् य इत्थमुपकर्ता किं तस्याज्ञा नहि मन्तव्या? अपितु, अवश्यमेव मन्तव्या स्मृतिः अपि न विस्मर्तव्या।

साधारणोपदेशः (८)

धर्मस्य सार्वभौमानि कानि लक्षणानि इति जिज्ञासा वर्तते। धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः। धीर्विद्यासत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ॥ १॥ वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद् धर्मस्य लक्षणम् ॥ इति मनुमहाराजेन

६ प्रणाम कर्ता की।

धर्मचिह्नानि प्रदर्शितानि। किमेतानि सर्वजनीनानि, उताहो विरुद्धानि विज्ञानदृष्ट्या तु विश्वजनीनानि परन्त्वन्धपरम्परयाग्रहदोषवृद्धया विरुद्धविद्यया चेदं सकलं प्रतीपं प्रतीयते वेदविहितानि च यानि कर्माणि सन्ति तानि विश्वजनीनानि न तत्र पक्षपातत्वं कोऽपि विद्यते।

साधारणोपदेशः (९)

अयि भो बालकाः! दया स्वर्गस्य सोपानमस्ति। पीड़िताय जीवाय पीड़ादानं वरं नास्ति। अन्धं पङ्गुमङ्गविहीनं जनं दृष्ट्वा कदापि हास्यं न कार्यम्। न जाने युष्माकं शरीरेऽपीदृशी घटना संघटते। कस्यापि निन्दा नहि कर्तव्या, कुसङ्गत्या सर्वदा दूरं स्थेयम्। सत्सङ्गत्या स्वीयं जीवन विवर्तितव्यम्। सदा पवित्रतया वर्तितव्यम्। नित्यं दन्तधावनं स्नानं व्यायामः संध्योपासनं च करणीयम् मलिनानि वस्त्राणि कदापि नो धारणीयानि। मलिनैर्वस्त्रैरोगोत्पत्तिः संजायते। निवासस्थानं सर्वदा शुद्धं रक्षणीयम्। गृहाणां मलिनत्वेनापि रोगा उत्पद्यन्ते। वर्षाकाले पवित्रताया बाहुल्येन ध्यानं देयम्। कुतः अस्मिन्नेवर्तौ नानाविधारोगा जायंते॥

साधारणोपदेशः (१०)

मिथ्याभाषणं कदापि न विधेयम्। अनृतवचनेन नरस्यानादरोभवति। असत्यभाषिणश्च कश्चिदपि विश्वासं न विदधाति यदा जनस्य विश्वासं गच्छति तदा स बाहुल्येन दुःखं प्राप्नोति। सत्यवदनेन कदापि हानि

न जायते अपितु सर्वदा लाभ एव भवति। सत्यं धर्मस्य मूलं वै। इयं किंवदन्ती प्रसिद्धाऽस्ति सत्ये दुःखं न विद्यते यावन्ति वस्तूनि यूयं संसारे लोचध्वे वेत्थ वा वस्तुतस्तेषां सर्वेषां स्वामी रक्षकः केवल ईश्वर एवास्ति। तेन जगदीश्वरेण मनुष्येभ्यःसर्वेभ्योऽपि का बुद्धिर्दत्तास्ति। ईश्वरः शुभकर्मभिः प्रसीदति, अशुभकर्मभिश्च नहि प्रसीदति। स सर्वत्र विद्यते सर्वेषां च कर्माणि पश्यति।

साधारणोपदेशः (११)

अयि शिशवः, स्वकीयादायादधिकोव्ययः कदापि नहि कार्यः। मिथ्याप्रशंसार्थम् ऋणमादाय व्ययकरणं महती मूर्खतास्ति। ऋणकरणं कदापि वरं नास्ति। कुतः ऋणी सर्वदा चिन्तातुरोभवति। यदा प्रतिज्ञाकाले धनं न दीयते तर्हि विश्वासो गच्छति। दुःखं च बाहुल्येन भुज्यते धर्मशास्त्रेऽपि लिखितमस्ति ऋणिनो नरस्य मुक्तिर्न भवति। अतएव युष्मदर्थमुचितमस्ति, स्वकीयादायादन्यूनव्ययेन भाव्यम् येन सुखपूर्वकं जीवनमतिवाहयत॥

साधारणोपदेशः (१२)

बालकाः! यूयं जानीथ यदा युष्माकमुत्पत्तिरभूत्तदा कीदृशी दशासीत्। नोत्थातुं सामर्थ्यमासीन्न चोपवेष्टुम्। न च लाभालाभं जानीथ?। ईदृशां दशायां च युष्माकं पितृभ्यां रक्षाकारि। अनेकानि दुःखानि सहित्वापि युष्माकं दुःखं दूरीकृतम् जनन्या दशा

विचारणीयास्ति, दशमासपर्यंतं तया युष्माकमुदरे रक्षणं कृतम्। यदा युष्माकं जन्म संजातं तदाऽनेकस्नेहेन स्वीयं स्तनक्षीरं पायितम्। आर्द्रास्तरणे स्वयं शयितवती परन्तु युष्मान् शुष्कास्तरणे शायितवती। जनकस्यापि दशा विचारणीयास्ति। अनेकैः क्लेशैः सह वर्त्तमानो महता परिश्रमेण धनमुपार्जयति। युष्मभ्यं मच्छान्यच्छानि भोजनानि सुंदराणि च वस्त्राणि प्रयच्छति। अतएव मातापित्रोः प्रत्युपकारे कदापि प्रमादो नहि कर्त्तव्यः॥

साधारणोपदेशः (१३)

एको नर उदरपीड़याऽधिकपीड़ितो भूत्वा वैद्यस्य समीपं जगाम। आत्मनीनः सर्वो वृत्तान्तश्च निवेदितः वैद्यः पप्रच्छ रात्रौ किं भोजनं कृतम्। रोगी जगाद। अपक्वं ज्वलितं च भोजनं कृतम्। इदमाकर्ण्य वैद्यस्तस्य नेत्रयोरञ्जनं पातयामास। रोगी व्याकुली-भूत्वोवाच। भो महाशय! चिकित्सक! उदरपीड़ायां किं नयनचिकित्सा भवति! वैद्यो जगाद। प्राक् तव लोचनभेषजस्यावश्यकतास्ति। कुतो यदि भवतो लोचनज्योतः सम्यग् भविष्यत्तर्हि नेत्थं भोजनमकरिष्यत्।

फलम्।

मनुष्येण समीक्ष्य भोजनं भोक्तव्यम् ज्वलितानि गलितान्युषितानि च वस्तूनि कदापि नो खादनीयानि। कुतएभिरनेकेषां रोगाणामुत्पत्तेः सम्भवोऽस्ति॥

साधारणोपदेशः (१४)

प्रमादेन क्रीड़या वा समयो नहि नष्टव्यः। सत्कर्म-

णैव कालो व्ययीकरणीयः। रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातम्, भास्वानुदेष्यति गमिष्यति चान्धकारः युष्माभिर्यः कालोऽतिवाहितस्तं पुनः प्रचुरधनव्ययेन बहुयत्नेन प्रभूतपरिश्रमेणापि प्राप्तुं न शक्ष्यथ नीतिज्ञा वदन्ति, वयमपि च प्रपश्यामः. ये मूढा आलस्येन क्रीडया वा विद्यां प्रत्यौदास्येन बाल्यकालं वृथा यापितवन्तस्तेषां मध्यात् केचिदिदानीं गृहस्थानां द्वारे द्वारे भिक्षार्थं भ्रमन्ति। केचिदात्मीयानां गलग्रहा भवन्ति केचिच्च धनिनां गेहे मरणाधिकं दासत्वमाचरन्ति। सुखेन स्वोदरपूरणमपि तेषां दुःसाध्यं भवति।

हंहो शिशवः इदानीमेव युष्मान् सावधानान् कर्त्तुमीहे। शृणुत! मद्वचनमस्मिंश्च विश्वसित। सर्वथा युष्माभिर्बाल्यकालो वृथा नहि यापयितव्यः। इतः परमिमं कालं कदापि न प्राप्स्यथ। किं कदापि हस्तविक्षिप्तो लोष्टो भूयः प्रत्यागच्छति यो गतो गत एव सः॥

साधारणोपदेशः (१५]

गुणो हि गौरवस्थानम्, न रूपं न धनं तथा। पश्यत सुन्दरं शाल्मलीकुसुमं गन्धविहीनं विज्ञाय कोऽपि नाद्रियते कुत्सितमपि मुचुकुन्दप्रसूनं केषामन्तःकरणं न सन्तोषयति। सर्वे मधुरकूजिनः शारिका शुक-कोकिलादीन् प्रियदर्शनानपि विहङ्गमान् परिपालयितुं यतन्ते परं सौन्दर्यशालिनो नेतरान् कटुतिक्तकषायान्वितमप्यौषधं यत्नतः को न सेवते। गुणहीनं प्रचुरधनशालिनमपि मूर्खोऽयमुद्धतोऽयमित्युक्त्वा सर्वे एवावजानन्ति। किन्तु कुलहीनो दरिद्रः कुरूपोऽपि गुणवान्

सदा सर्वैरेव सम्मान्यते। एकाकाराण्यपि शस्य तृणानि जनैः संरक्ष्यन्ते श्यामाकादीनि तु यत्नेन नोत्पाट्यन्ते अतएव यः पृथिव्यां मानवजन्म परिगृह्य गुणवान् न जातस्तस्य जन्मैव निरर्थकम्। स केवलं जनन्या गर्भधारणपोषणजनितक्लेशस्य कारणं भवति। निर्गुणः कमपि सुखयितुं न शक्नोति।

साधारणोपदेशः (१६)

एकदा पशुपक्षिमध्ये कलहः समजनि। दिवान्धः पृथक् स्थित्वाऽपश्यत्। यदा कश्चित् पप्रच्छ तदावोचत् 'नाहमेषु न तेषु' उत्तिष्ठन् सन् मनसि विचारयतिस्म यस्य जयो भविष्यति तस्मिन् पक्षे मेलितास्मि। यदा पशुजयो बभूव तदा तानभ्युपेत्योवाच। अहं यौष्माकीणः पक्षोयोऽस्मि। मामकीना गणना पक्षिषु नो विद्यते। केनापि कदाचिदीदृशः खगो दृष्टः, यस्य मम सदृशा दन्ताः स्युः। पुनर्यदा पक्षिजयोऽभूत्तदा पशुसङ्गं विहाय पक्षिपक्षं गत्वाऽमेलीदवोचच्च। अहमपि यौष्माकः पाक्षः। पश्यताहं सदन्तोऽस्मि। पुनः पक्षिजयः समजनिष्ट। इदं दृष्ट्वा पशुसङ्गं त्यक्त्वा पक्षिपक्षं जगाम। बभाषे च अहं युष्मदीयः पक्षीयः पश्यतोहं समक्षोऽस्मि। कदापि पक्षिणो मम तुल्यमुड्डुनं शक्नुवन्ति। तर्हि पुनरहं पक्षी कथं नास्मि। दिवान्धेनेदृशं चातुर्यं कृतम् परन्तु केनापि स्वपक्षे न संमेलितः। तदाप्रभृति निराशीभूत्वादिवान्धःपृथक्त्वेन तिष्ठति।

अस्मादेव हेतोःपशुपक्षिसम्मुखे दिवान्धो न निर्गच्छति यदा पशवः शेरते पक्षिणश्च स्वनीडमाश्रयन्ते तदासौ रात्रौ निःसरति, येन च कश्चिन्नालोकेत ।

तात्पर्यम् ।

छिनाविकःसर्वदा दुःखं लभते नेत्थं कार्यं केनापि कार्यम् ।

(पुत्र्याः पित्रे पत्रम्) प्रयागतः ।

श्रीमन्नज्ञानध्वान्त[1]निवारक ! विज्ञानप्रकाशक ! प्रेमाकर[2] ! परमपूज्यतम ! पितः ! अभिवादये ।

भवन्तमिमं हर्षप्रदं समाचारं श्रावयामि-वार्षिक्यां परीक्षायां सर्वासु कन्यकास्वहं प्रथमां संख्यां सम्प्राप्तास्मि, पारितोषिके मह्यं पञ्चरूप्यकाणि विश्वेषां वेदानां समानि पुस्तकानि कौशेयवस्त्र[3]संवेष्टितानि च मिलितानि येनेदानीमहमतीव संहर्षास्मि नूतनायां कक्षायामधुना मे प्रवेशो भविष्यति, अतएव नव्यानां पुस्तकानामावश्यकता भविष्यति तदर्थं विंशतिमुद्राःप्रेषणीयाः मातुश्चरणौ संगृह्य मुहुर्मुहुः प्रणमामि-शेषं कुशलम् ।

भावत्की-पुत्री प्रियंवदा

माघशुक्ला १५ $\frac{११}{१९६७}$ वि०

मित्राय-पलाशम् । कर्णपुरतः ।

प्रियतमाय सहृदयाय सुहृज्जनाय धर्मदत्ताय नमोऽस्तु । सखे ? अद्य प्रभाते भावत्कं पलाशं समुपलब्धम् अधीत्य[6] च सकलः समाचारोऽवोधि ।

१ अन्धकार २ । प्रेमकी खान । ३ रेशमी । ४ खुश हूं ५ । आपकी । ६ पढ़कर । ७ सब । ८ जाना ।

आत्मनीनां परीक्षोत्तीर्णतां समाकर्ण्य प्रसीदामि परन्तु भावत्कीमनुत्तीर्णतां विज्ञाय विषीदामि अधुना पश्चात्तापकरणेन किं भवति यद् भूतम् तद् भूतम् हेयं दुःखमनागतम्' अनागतानि च यानि दुःखानि तेषां दूरीकरणाय नरेण प्रवरेण प्रयतितव्यमिति । येऽभ्यारोहा भवन्ति तएव तु पतन्ति न च प्रेष्ठ्यः । नेदमवद्यं कार्यं यत्र च लज्जते भवान् स्वकीयान् वर्तमानान् विचारान् विहाय पुनरपि विद्यालयगमनेन भाव्यमितिशम् ॥

भवत्सखः---

त्रिविक्रमः । चैत्र शुक्लापञ्चमी ५ १९८७ वि०

सङ्कलिताङ्काः (पहाड़ा)

(११)

एकादशैककमेकादश ११
एकादशद्विकन्द्वाविंशतिः २२
एकादशत्रिकन्त्रयस्त्रिंशत ३३
एकादशचतुष्कञ्चतुश्चत्वारिंशत ४४
एकादशपञ्चकम्पञ्चपञ्चाशत् ५५
एकादशषट्कं षट्षष्टिः ६६
एकादशसप्तकं सप्तसप्ततिः ७७
एकादशाष्टकमष्टाशीतिः ८८
एकादशनवकन्नवनवतिः ९९
एकादशदशकमेकशतं दश ११०

(१२)

द्वादशैककन्द्वादश १२
द्वादशद्विकञ्चतुर्विंशतिः २४
द्वादशत्रिकं षट्त्रिंशत् ३६
द्वादशचतुष्कमष्टाचत्वारिंशत ४८
द्वादशपञ्चकं षष्टिः ६०
द्वादशषट्कन्द्वासप्ततिः ७२
द्वादशसप्तकञ्चतुरशीतिः ८४
द्वादशाष्टकं षण्णवतिः ९६
द्वादशनवकमेकशतमष्टौ १०८
द्वादशदशकमेकशतंविंशतिः १२०

(१३)

त्रयोदशैककन्त्रयोदश १३
त्रयोदशद्विकं षड्विंशतिः २६
त्रयोदशत्रिकमेकोनचत्वारिंशत् ३९
त्रयोदशचतुष्कन्द्विपञ्चाशत् ५२
त्रयोदशपञ्चकम्पञ्चषष्टिः ६५
त्रयोदशषट्कमष्टसप्ततिः ७८
त्रयोदशसप्तकमेकनवतिः ९१
त्रयोदशाष्टकमेकशतञ्चत्वारः १०४
त्रयोदशनवकमेकशतंसप्तदश ११७
त्रयोदशदशकमेकशतन्त्रिंशत् १३०

(१४)

चतुर्दशैककञ्चतुर्दश १४
चतुर्दशद्विकमष्टविंशतिः २८
चतुर्दशत्रिकन्द्विचत्वारिंशत् ४२
चतुर्दशचतुष्कं षट्पञ्चाशत् ५६
चतुर्दशपंचकं सप्ततिः ७०
चतुर्दशषट्कञ्चतुरशीतिः ८४
चतुर्दशसप्तकमष्टनवतिः ९८
चतुर्दशाष्टकमेकशतन्द्वादश ११२
चतुर्दशनवकमेकशतंषड्विंशतिः १२६
चतुर्दशदशकमेकशतञ्चत्वारिंशत् १४०

(१५)

पञ्चदशैककम्पञ्चदश १५
पञ्चदशद्विकन्त्रिंशत ३०
पञ्चदशत्रिकम्पञ्चचत्वारिंशत् ४५
पञ्चदशचतुष्कं षष्टिः ६०
पंचदशपंचकम्पञ्चसप्ततिः ७५
पञ्चदशषट्कन्नवतिः ९०
पञ्चदशसप्तकमेकशतम्पंच १०५
पंचदशाष्टकमेकशतंविंशतिः १२०
पंचदशनवकमेकशतम्पञ्चत्रिंशत् १३५
पंचदशदशकमेकशतपंचाशत् १५०

(१६)

षोडशैककं षोडश १६
षोडशद्विकन्द्वात्रिंशत ३२
षोडशत्रिकमष्टाचत्वारिंशत् ४८
षोडशचतुष्कञ्चतुष्षष्टिः ६४
षोडशपंचकमशीतिः ८०

षोडशषट्कं षण्णवतिः ९६
षोडशसप्तकमेकशतन्द्वादश ११२
षोडशाष्टकमेकशतमष्टविंशतिः १२८
षोडशनवकमेकशतञ्चतुश्चत्वारिंशत् १४४
षोडशदशकमेकशतं षष्टिः १६०

(१७)

सप्तदशैककं सप्तदश १७
सप्तदशद्विकं चतुस्त्रिंशत् ३४
सप्तदशत्रिकमेकपंचाशत् ५१
सप्तदशचतुष्कमष्टषष्टिः ६८
सप्तदशपंचकमेकाशीतिः ८५
सप्तदशषट्कमेकशतन्द्वौ १०२
सप्तदशसप्तकमेकशतमेकोनविंशतिः ११९
सप्तदशाष्टकमेकशतं षट्त्रिंशत् १३६
सप्तदशनवकमेकशतन्त्रिपंचाशत् १५३
सप्तदशदशकमेकशतं सप्ततिः १७०

(१८)

अष्टादशैककमष्टादश १८
अष्टादशद्विकं षट्त्रिंशत् ३६
अष्टादशत्रिकञ्चतुःपंचाशत ५४
अष्टादश चतुष्कं द्वासप्ततिः ७२
अष्टादशपंचकन्नवति ९०
अष्टादशषट्कमेकशतमष्टौ १०८
अष्टादशसप्तकमेकशतं षड्विंशतिः १२६
अष्टादशाष्टकमेकशतं चतुश्चत्वारिंशत् १४४
अष्टादशनवकमेकशतन्द्विषष्टिः १६२
अष्टादशदशकमेकशतमशीतिः १८०

(१९)

एकोनविंशत्येककमेकोनविंशतिः १९
एकोनविंशतिद्विकमष्टत्रिंशत् ३८
एकोनविंशतित्रिकं सप्तपंचाशत् ५७
एकोनविंशतिचतुष्कं षट्सप्ततिः ७६
एकोनविंशतिपंचकं पंचनवतिः ९५
एकोनविंशतिषट्कमेकशतं चतुर्दश ११४
एकोनविंशतिसप्तकमेकशतत्रयस्त्रिंशत् १३३
एकोनविंशत्यष्टकमेकशतन्द्वापंचाशत् १५२
एकोनविंशतिनवकमेकशतमेकसप्ततिः १७१
एकोनविंशतिदशकमेकशतनवतिः १९०

(२०)

विंशत्येककं विंशतिः २०
विंशतिद्विकं चत्वारिंशत् ४०
विंशतित्रिकं षष्टि ६०
विंशतिचतुष्कमशीतिः ८०
विंशतिपंचकं शतम् १००
विंशतिषट्कमेकशतं विंशतिः १२०
विंशतिसप्तकमेकशतं चत्वारिंशत् १४०
विंशत्यष्टकमेकशतं षष्टिः १६०
विंशतिनवकमेकशतमशीतिः १८०
विंशतिदशकन्द्विशतम् २००

समाप्तम्.